ISBN : 978-93-341-2446-0

प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

राजीव अग्रवाल

सुशील कुमार

पुष्पेन्द्र कुमार

प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,

अतर्रा (बांदा)

सुशील कुमार

M.A. (संस्कृत), M.Ed.

पुष्पेन्द्र कुमार

B.A., B.Ed.

प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल

सुशील कुमार

पुष्पेन्द्र कुमार

©सर्वाधिक सुरक्षित

E- Book संस्करण - 2024

मूल्य - 99 रुपए

ISBN : 978-93-341-2446-0

प्रकाशक

पुष्पेन्द्र कुमार

अतर्रा रोड, नेता नगर, बबेरू

जिला- बांदा (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड- 210121

मो. - 7068930210

ई-मेल: **pushpendraansurya007@gmail.com**

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास की आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

हमारा देश कवियों का देश रहा है, प्राचीन काल से ही कवियों का चिन्तन चलता रहा है। प्राचीन काल में कवियों का चिन्तन अलग रूप में रहा, धीरे–धीरे समयानुसार चिन्तन का रूप बदलता रहा और नई–नई विचारधाराएँ अपने देश की संस्कृति को प्रवाहित करती रही हैं।

वर्तमान समय में भी परिस्थिति अनुकूल जैसे–राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक स्तर पर नागार्जुन, प्रेमचन्द तथा प्रतापनरायण आदि ने विचार प्रस्तुत किए हैं, ऐसे ही फतेहपुर के क्षेत्रीय कवि प्रद्युम्न कुमार सिंह हैं जो ग्रामीण परिवेश की परिस्थिति एवं संस्कृति के शैक्षिक मूल्य परक कविताओं पर कार्य किया है, जिनका चिंतन हर समय किसी ग्रामीण एवं राष्ट्र में अनवरत रूप से सक्रिय राहता है और यदि भ्रमण के दौरान कोई क्रिया प्रतिक्रिया हुई तो उस पर भी शैक्षिक मूल्य हेतु विचार अभिव्यक्ति करते रहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, **'प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान'**। इस पुस्तक को **छः अध्यायों** में विभाजित किया गया है—

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है। जिसके अन्तर्गत, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता तथा समस्या का प्रादुर्भाव पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है जिसके अन्तर्गत शैक्षिक विचारधारा से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में कवि प्रद्युम्न कुमार सिंह का बाल्य जीवन परिचय, वंश परंपरा, गृहस्थ जीवन, अध्ययन यात्रा, सेवा यात्रा, शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान के विभिन्न पहलुओं पर सविस्तार वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रद्युम्न कुमार सिंह जी की साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है, जिसके अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें, प्रकाशित कवितायें तथा अप्रकाशित कविताओं का वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में प्रद्युम्न कुमार सिंह जी द्वारा रचित शैक्षिक मूल्य परक रचनाएओं के भावार्थ एवं प्रासंगिकता को प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, अध्ययन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। प्रत्येक शोधकार्य सदैव सौद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है, इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने के नितांत आवश्यकता होती है। एक मनुष्य के रूप के शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य की पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में प्रद्युम्न कुमार सिंह जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत करने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

डॉ. राजीव अग्रवाल

सुशील कुमार

पुष्पेन्द्र कुमार

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
प्रथम	अध्ययन परिचय	1-7
	1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया	
	1.2 हिंदी शिक्षण का स्वरूप	
	1.3 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ	
	1.3.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण	
	1.3.2 राजनीतिकरण	
	1.3.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार	
	1.3.4 सरकारी विद्यालयों की दयनीय स्थिति	
	1.3.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा	
	1.3.6 योग्य शिक्षकों का अभाव	
	1.4 समस्या का प्रादुर्भाव	
	1.5 समस्या कथन	
	1.6 अध्ययन के उद्देश्य	
	1.7 शोध विधि	
	1.7.1 वर्णानात्कम अध्ययन विधि	
	1.7.2 केस अध्ययन विधि	
	1.8 अध्ययन का महत्व एवम् सार्थकता	

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
द्वितीय	सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	8-12
	2.1 प्रस्तावना	
	2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन	
	2.3 अध्ययन से संबंधित लेख, समाचार इत्यादि	
	2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष	
तृतीय	प्रद्युम्न कुमार सिंह: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	13-16
	3.1 बाल्य जीवन	
	3.2 वंश परंपरा	
	3.3 व्यक्तित्व	
	3.4 अध्ययन और अध्यापन/सेवा योजन कार्य	
	3.5 गृहस्थ जीवन	
	3.6 लेखन प्रेरणा स्रोत दृश्यांकन	
	3.7 रचनाएँ	
	3.8 पुरस्कार	
चतुर्थ	साहित्य सर्जना	17-25
पंचम	प्रद्युम्न कुमार सिंह द्वारा रचित शैक्षिक मूल्य परक रचनाएँ	26-40
	5.1 अब छोड़नी होगी	
	5.2 वे शब्दों के संवाहक	
	5.3 कमाल के लोग हैं	

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
	5.4 एक हारा हुआ व्यक्ति	
	5.5 आओ मुझे मांजो	
	5.6 यह हकीकत है	
	5.7 पोंछ डालो	
षष्ठ	निष्कर्ष एवं सुझाव	41-47
	6.1 निष्कर्ष	
	6.1.1 कविता सम्बन्धी	
	6.1.2 व्यक्तित्व सम्बन्धी	
	6.2 सुझाव	
	6.3 शैक्षिक उपादेयता	
	6.4 भावी शोध हेतु सुझाव	
	सन्दर्भ गृन्थ सूची	48-49
	परिशिष्ट	50-53
	(अ) कवि प्रद्युम्न जी के समकालीन कवि एवं उनकी रचनाएँ	
	(ब) कवि प्रद्युम्न जी से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि	
	(स) शोधार्थी का जीवनवृत्त	

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा को एक प्रक्रिया माना जाता है। प्रक्रिया का अर्थ है एक विशेष प्रकार की क्रिया, जिससे मानव में कुछ विशेताएँ आ जाती हैं। मानव कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ इस संसार में आता है। इन जन्मजात शक्तियों के साथ मानव को कुछ बाहरी शक्तियाँ (भौतिक और सामाजिक शक्तियां) भी प्राप्त होती हैं। मानव की इन जन्मजात व बाहरी शक्तियों में क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। यही क्रिया प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया है। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ के अनुसार, शिक्षा मानव की आंतरिक शक्तियों का विकास करने की प्रक्रिया है। मानव में जो जन्मजात आंतरिक शक्तियाँ विद्यमान होती हैं, उनका विकास वातावरण के सम्पर्क से होता है।

1.2 हिन्दी शिक्षण का स्वरूप

हिंदी भारत की राजभाषा और संपर्क भाषा है। भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ विविध प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता है। इसीलिए उत्तर भारत में प्रथम भाषा होने के साथ-साथ देश के अनेक राज्यों में हिंदी की स्थिति द्वितीय भाषा और कुछ राज्यों में तृतीय भाषा की है। इसके अतिरिक्त विश्व के अन्य अनेक देशों के विद्यार्थी भी हिंदी सीखते हैं। इन सभी रूपों में हिंदी का शिक्षण हिंदी भाषा शिक्षण है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण को निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं—

प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण

द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण

विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण

प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण हिंदी भाषी क्षेत्रों में किया जाता है। इन क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में हिंदी का व्यवहार होता रहता है, इसलिए हिंदी के औपचारिक और साहित्यिक स्वरूप का ही शिक्षण किया जाता है। भाषा कौशल की दृष्टि से केवल पढ़ना और लिखना कौशलों का शिक्षण ही अपेक्षित होता है। द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिंदी सिखाने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। वहाँ अध्येता की मातृभाषा का भी व्यापार होता है। **विदेशी भाषा** के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए और अधिक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि वहाँ हिंदी का परिवेश भी उपलब्ध नहीं होता। **द्वितीय भाषा और तीसरी भाषा** के रूप में हिंदी शिक्षण में अध्येता का उद्देश्य भी महत्वपूर्ण होता है कि वह हिंदी क्यों सीखना चाहता है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण एक बड़ा क्षेत्र है, जिस पर भाषा की दृष्टि से अलग-अलग विचार किया जा सकता है, क्योंकि भाषा शिक्षण की प्रविधि और सामग्री इस बात पर भिन्न हो जाती है कि अध्येता किस रूप में हिंदी को सीखना चाहता है।

वर्तमान परिवेश में हिंदी भाषा शिक्षण को तकनीकी माध्यमों से जोड़ना नितांत आवश्यक है। यदि हिंदी भाषा शिक्षण को

वर्तमान तकनीकी जगत के साथ अद्यतन करना है तो यह आवश्यक है कि डिजिटल माध्यमों का हिंदी भाषा शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाए। डिजिटल माध्यमों से तात्पर्य है- कंप्यूटर और मोबाइल आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर की भूमिका अपरिहार्य है। शिक्षण प्रशिक्षण भी इससे अछूता नहीं है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग आवश्यक है। वर्तमान समय में मोबाइल केवल संचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह मिनि- कंप्यूटर के रूप में कंप्यूटर द्वारा किए जाने वाले अनेकानेक कार्यों को हमारी मुट्ठी में रहते हुए संपन्न कर रहा है। इसीलिए सामान्य संचार के लिए प्रयुक्त मोबाइल फोनों से अलग इन्हें स्मार्टफोन कहा जाता है। हिंदी भाषा शिक्षण को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मोबाइल और स्मार्टफोन प्लेटफॉर्म का भी अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित है।

हिन्दी शिक्षण के पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा के अनेक कवि एवं साहित्यकारों को स्थान दिया गया है।

1.3 वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.3.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोगों का गठन ही नहीं किया। अपितु उनकी सलाह पर कार्य किया। परन्तु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके सम्बन्ध में कोठारी आयोग 1964 ने कहा है- बार-बार सलाह देने के पश्चात भी दुर्भाग्य की बात यह है। कि विद्यालय स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है। और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसायीकरण का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है। किसी व्यवसायिक में प्रशिक्षण अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना। ताकि वह अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ-साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ- साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनाए।

1.3.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

अधिकांश लोगों को आश्चर्य होता है कि स्कूलों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाना क्यों आवश्यक है? क्या आप अपने आप को ऐसे परिदृश्य में पाते हैं? जहाँ राजनीति और शिक्षा के बीच सम्बन्धों के सम्बन्ध में एक पराजय होती है। बराक ओबामा को आदर्श उदाहरण के रूप में उपयोग करने में संकोच न करें। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को आधुनिक युग के महानतम नेताओं में से एक माना जाता है, और उनकी अनुकरणीय नेतृत्व शैली सबसे शानदार घटनाओं में से एक है जिसे कई लोग सीखना चाहते हैं। इसलिए, उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ईर्ष्या पूर्ण नेतृत्व की स्थिति कैसे मिली, इसलिए राजनीति और शिक्षा को एक साथ लाने वाले अधिक सत्रों को एकीकृत करने की आवश्यकता को खारिज करने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण के रूप में पर्याप्त होना चाहिए। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्र के पढ़ने, समझ और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। अशिक्षित नेताओं द्वारा शासित दुनिया की कल्पना निराधार है। यह प्रशंसनीय नहीं लगता, है ना? इसीलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है। कि बुक स्मार्ट होना प्रभावी नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ नहीं दर्शाता है। लेकिन फिर भी यह कई घटनाओं में से एक के रूप में मद नेता बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षा

किसी की सोच को कही अधिक विस्तृत करती है। हालांकि, हमें स्कूलों में अधिक राजनीति शुरू करने में सावधानी बरतनी चाहिए, शिक्षा प्रणाली को वामपन्थी झुकाव के लिए जाना जाता है, विश्वविद्यालयों को और अधिक लेकिन नवीनतम आम चुनाव में वामपन्थी दलों के पक्ष में पूर्वाग्रह अधिक था। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए। कि हमारे भविष्य के नेताओं और राजनेताओं को राजनीति सिखाते समय कि हम कुछ हद तक तटस्थ रुख रखते हैं, जाहिर है कि हम पूर्वाग्रह और रुख को समाप्त नहीं कर सकते हैं। लेकिन हम लेबर पार्टी या लिब डेम्स के विचारों के बजाय एक सन्तुलित राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। दूसरा जनमत संग्रह दल या मार्क्सवादी समाज हमारे बच्चों को मार्क्सवाद से लेकर फ़ासीवाद तक और साथ ही बीच में सब कुछ के राजनीतिक स्पेक्ट्रम की चरम सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। और यह सर्वोपरि होना चाहिए, कि बच्चों को सूचना अन्तराल और अपना मन बनाने में सक्षम होना चाहिए।

राजनीति विज्ञान और कानून उन सर्वोत्तम पाठ्यक्रमों के रूप में पर्याप्त हैं। जो चतुराई से राजनीति और शिक्षा के बीच के बन्धन को जोड़ते हैं। शिक्षण संस्थानों में या तो प्रभावी नेतृत्व प्रणाली के माध्यम से या पाठ्यक्रमों के माध्यम से राजनीति को शामिल करना, भविष्य के नेताओं को आकार देने में सहायता करता है। साथ ही जनता को यह भी शिक्षित करता है, कि प्रशासनिक प्रक्रियाएँ कैसे होती हैं? हर यात्रा एक कदम से शुरू होती है। ऐसे मामलों में, स्कूलों में राजनीतिक घटनाएँ होने से छात्रों को अपने भविष्य के कैरियर की तैयारी करने में मदद मिलती है। यह तय किया जाना चाहिए कि राजनीति न केवल राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होती है। बल्कि कॉर्पोरेट जगत में भी होती है। ऐसे वातावरण के सम्पर्क में आने वाले छात्र नीति सलाहकार बनने के साथ-साथ सरकार और कॉर्पोरेट एजेंसियों दोनों के लिए उत्साही शोधकर्ता बनने का एक बेहतर मौका देते हैं। इसलिए राजनीति और शिक्षा उनके सहजीवी सम्बन्धों के मूल्य को दर्शाती है क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे को फिर से परिभाषित करते हैं। राजनीति और शिक्षा दो ऐसे क्षेत्र हैं। जो सीखने पर केन्द्रित समान विषयों पर निर्भर करते हैं। इसका तथ्य यह है, कि हर शिक्षक कभी छात्र था। हर नेता कभी प्रशिक्षु नेता था। हालाँकि एक बात स्थिर रहती है।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरू-शिष्य परम्परा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरु का सम्मान करते हुए शिक्षा पाते थे, परन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी हमें शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं, लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरू-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक छात्र सम्बन्धों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है।

इसमें छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है, कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं, जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है, कि अभिभावक, गुरू, छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है और न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होता चला गया जो अब चरम पर है। इस समानान्तर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

1.2.4 सरकारी विद्यालयों की दयनीय स्थिति

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई, तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत ढाँचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएँ संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं, और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है, और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। सरकारी स्कूल की बात करें तो यहाँ चार वर्षों से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के अलावा अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती है।

1.2.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और सभी सिद्धान्तों का एक मात्र उद्देश्य है मनुष्य का कल्याण करना। मानव जीवन में संस्कार और संस्कृति का बहुत महत्व है। संस्कार सम्पन्न सन्तान ही गृहस्थ की सफलता और समृद्धि का रहस्य है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य बनता है कि वे अपने बच्चों को नैतिक बनाएं और कुसंस्कारों से बचाकर बचपन से ही उनमें आदर्श और संस्कारों का ही बीजारोपण करें। लेकिन आज भारतीय संस्कृति और संस्कार सब तुम होते दिखाई दे रहे हैं। आज बालकों में हिंसा तथा व्यभिचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आखिर क्यों? आज युवा वर्ग परिश्रम और धैर्य से दूर होता जा रहा है। समाज में सात्विक प्रवृति का दमन होता जा रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रहे है। जहाँ पूरा विश्व हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना रहा है और हम अपनी संस्कृति को भूलकर उनकी संस्कृति को अपना रहे हैं। यह हमारी मूर्खता नहीं तो और क्या है? आज हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना करने लगे हैं। संस्कारों की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अंधानुकरण से समाज में

अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियाँ, शिक्षा पद्धति में बदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियाँ और पाश्चात्य रहन-सहन से अनेक सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं।

1.2.6 योग्य शिक्षकों का अभाव

"भारतीय शिक्षा प्रणाली बुरी नहीं है, बल्कि समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते हैं। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षक, विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्या के रूप में देखा जाता है। इसमें सारा जोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केन्द्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिज़ाइनिंग में शिक्षकों के फीडबैक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है। तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति से एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग कीओर बढ़ते गए शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति एवं नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए , शिक्षा का व्यवसायीकरण , राजनीतिकरण हुआ, परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों आदरसों का परिचय नहीं देती शिक्षा नहीं कही जाती। आधुनिक समय में योग्य शिक्षकों का अभाव है, जिसमें शिक्षकों द्वारा किए गए कार्यों का प्रचार होना चाहिए उनकी लिखी कृतियों को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए, शोधार्थी ने फतेहपुर जनपद के एक सुयोग्य अध्यापक **प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान** पर लघु शोध करने का निर्णय लिया।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य के लिए जिस समस्या का चयन किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है—

प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

- फतेहपुर के प्रसिद्ध लोक कवि प्रद्युम्न कुमार सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- कवि प्रद्युम्न कुमार सिंह की साहित्यिक सर्जना का अध्ययन करना।
- कवि प्रद्युम्न कुमार सिंह के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य परक रचनाओं का अध्ययन करना।
- प्रद्युम्न कुमार सिंह जी की मूल्य परक रचनाओं की प्रासंगिकता स्पष्ट करना।

- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.6 शोध विधि

शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालकों के व्यवहार में विकास एवं परिवर्तन करना है अनुसंधान तथा शिक्षण क्रियाओं द्वारा इन लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। शिक्षण की समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शिक्षा अनुसंधान कहते है। इस प्रकार शिक्षा अनुसंधान के प्रमुख मानदण्ड अधोलिखित हैं—

- शिक्षा के क्षेत्र में नवीन 'तथ्यों' की खोज नवीन सिद्धान्तों तथा सत्यों का प्रतिपादन करना अर्थात नवीन ज्ञान की वृद्धि करना नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक उपयोगिता होनी चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास में सुधार तथा विकास करके प्रभावशाली बना सके।
- शिक्षा अनुसंधान की समस्या क्षेत्र-शिक्षण या बालक विकास होना चाहिए।
- शिक्षा अनुसंधान की समस्या का स्वरूप इस प्रकार हो जिसका प्रत्यक्षीकरण किया जा सके तभी उसकी उपयोगिता हो सकती है।

इस प्रकार से यह वह शोध है जो शिक्षा के किसी भी और सभी पहलुओं पर किया जाता है। तो, यह दुनिया भर के शिक्षकों के बारे में हो सकता है, या किसी विशिष्ट कक्षा में एक विशेष शिक्षक के बारे में हो सकता है। यह छात्रों की विफलता दर या पाठ्यक्रम में उपयोग की जाने वाली विशिष्ट मूल्यांकन विधियों के मूल्य को देखने के बारे में हो सकता है। संक्षेप में, शोध का फोकस बहुत संकीर्ण या बहुत व्यापक हो सकता है। शैक्षिक अनुसंधान का सामान्य उद्देश्य शिक्षा में सुधार करना और शिक्षा से संबंधित नए ज्ञान और विभिन्न तत्वों को विकसित करना है।

1.7 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। जान डब्लू बेस्ट के अनुसार "वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है? का वर्णन एवं विष्लेषण करता है। परिस्थितियां अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है। अभ्यास जो चालू है। विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियां जो पायी जा रही हैं। प्रक्रियाएं जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे हैं अथवा नई दिशाएं जो विकसित हो रही हैं उन्हीं से इसका सम्बन्ध है। "वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है –वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता समस्या से सम्बन्धित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता है बल्कि वह समस्या से सम्बन्धित विभिन्न चरणों में आपसी सम्बन्ध ढूंढने का प्रयास करता है और साथ ही भविष्यवाणी भी करता है। प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रयोग किया गया है।

1.8 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के सम्बन्ध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसके जीवन की समस्त घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात करता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएं, अतीत की घटनाएं तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती है। तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं। जानकारी में साक्षात्कार प्रश्नावली व्यक्तित्व परीक्षण तथा मापनी आदि का प्रयोग किया जाता है, पर व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएं जानने की समुचित विधि है। इस विधि में अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता-पिता, पारिवारिक जन रिश्तेदार, पड़ोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं सम्बन्धित अभिलेखों से सूचना एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

मनुष्य को सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए कर्म करने की आवश्यकता पड़ती है। कर्मप्रधान व्यक्ति ही जीवन में वास्तविक सुख का आनंद प्राप्त कर सकता है। अकर्मण्यता मनुष्य को निराश और भाग्यवादी बनाती है।

मनुष्य के कर्म अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ कर्म तो यह अनिच्छापूर्वक बाध्यता के साथ मनुष्य करता है परंतु मनोयोग से किया गया कृत्य ही उसे सच्चा आनंद प्राप्त कराता है। इन समस्त क्रियाओं में अध्ययन सर्वश्रेष्ठ है। अध्ययनप्रिय व्यक्ति स्वयं को सदैव प्रसन्नचित्त रखता है। अध्ययन में मनुष्य की अभिरुचि सदैव उसे उत्थान की ओर ले जाती है। अध्ययन की महिमा अनंत है। प्रस्तुत लघु शोध में 'प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान' पर अध्ययन किया गया है। इनके काव्य साहित्य का अध्ययन समाज को नई दिशा देने वाला है। आप हिन्दी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ एक लेखक एवं कवि के रुप में प्रतिष्ठत हैं तथा अपनी लेखनी से जन सामान्य को प्रभावित व लाभान्वित कर रहे हैं। यह विशेषकर हिन्दी भाषा के शिक्षकों के लिए प्रेरणास्रोत है, इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एवं जन सामान्य भी इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरित होकर हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान में अपना योगदान दे सकेंगे।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसन्धान की प्रक्रिया में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्वपूर्ण चरण है, क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है। जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पथ होते हैं। ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढी को ज्ञान का स्थानान्तरण, ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिन्तन कर, परिष्कृत कर अथवा पूर्ण व आंशिक परिवर्तन 'करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है। कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से सम्बन्धित जितना भी यथा सम्भव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाएँ व गतवर्षों में एकत्रित किये गए अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्व परिचित करे जिससे यह ज्ञात होता है। कि समस्या से सम्बन्धित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है। उसमें शोध की कौन सी प्रविधि प्रयुक्त की गई। और समस्या कौन सा पक्ष ऐसा है जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यावहारिक आधार पर मानव संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर, परिष्कृत कर अथवा पूर्ण या आंशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं। ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना, और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धान्तों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं "डॉ० सी. वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का सम्बन्धित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है। जब तक उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो। " अनुसन्धान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो उसका लक्ष्य सम्बन्धित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई है तथा सदियों से उसका एक क्रम निरन्तर चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया अनन्त है जब तक मानव जीवन है। उसकी यह ज्ञान तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती है। क्या हो, कैसा हो या होना चाहिए? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है।

2.2. शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित है—

अंकिता चौधरी (2019) ने “हिंदी नव जागरण और कवि मैथिलीशरण गुप्त” नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—

- मैथिलीशरण गुप्त गांधी जी के रामराज्य के जनतांत्रिक आधारों को ही भावी भारत के सुशासन का आधार मानते हैं।
- कवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में चित्रित राजतंत्र का राजा हो या शासक उसकी मनोवृति, उसका प्रजा के साथ संबंध स्वतंत्र भारत के प्रजातांत्रिक मूल्य के अनुरूप ही है।
- राजा के उत्तराधिकारी के लिए लोकमत ही एक अनिवार्य व्यवस्था है, जैसे कि ‘साकेत’ और ‘वक्तसंहार’ के एकचका नामक नगरी का प्रसंग देखने को मिलता है।
- राजतंत्र के गुण और दोषों की व्याख्या करते हुए लोकतंत्र या कहिए जनतंत्र के गुण और दोष की भी चर्चा की है।
- राजतंत्र के दोषों की चर्चा करते हुए मीडिया और प्रेस के भ्रष्टाचार, मताधिकार को प्रभावित करने वाले कारकों, चुनावी प्रतिस्पर्धा में दलबदलू नीतियों और राजनीतिक दलों की चरित्रहीनता पर अपने विचार रखते हुए, इन्हें जनतंत्र का एक कमजोर पहलू बताते हैं।
- कवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रासंगिकता का महत्व उनकी काव्य-सर्जना शक्ति के साथ-साथ उनके पाठक उस रुचिकर वर्ग से भी निर्मित होता है जो पीढियों दर पीढ़ियों बदला परंतु उनकी कविता के प्रति उनमें ‘रुचि परिवर्तन’ की जड़ता नहीं आई।

दिलीप कुमार एम० गावित (2022) ने “सुमित्रानन्दन पंत की कविताओं में मानवतावाद एवं प्रकृति चित्रण” नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—

- विचार बढ़ते-बढ़ते इतना तीव्र हो जाते हैं कि जड़ वस्तुओं को भी चेतन मानकर उसमें संवेदना का अनुभव करने लगता है फिर पंत जी तो उसको सजीव ही मानते हैं।
- पंत जी को सारी प्रकृति स्वयं दुख से दुखी और सुख से सुखी दिखाई पड़ती है।

- आधुनिक कविता में प्रकृति पर अपने सुख-दुख का रंग चढ़ाने की प्रवृत्ति बहुत पाई है।
- बचपन से ही प्रकृति का निरीक्षण करते हुए दिनों-दिन कवि के काव्य की नई दिशा का निर्देश हुआ।
- पंत जी बचपन से ही मातृहीन होने के कारण सदा प्रकृति के बारे में सोंचते रहे। प्रकृति के विविध उत्पादों एवं अवस्थाओं के विषयों में सदा चिंतन करते रहे जिससे कवि को अपने दुखद क्षणों में प्रकृति से प्रेरणा एवं शांति मिली।
- यह प्रकृति चिंतन ही है जिससे पंत जी का आंतरिक साम्य भंग नहीं होने पाया है और वे मानव जगत को सदा प्रसन्न रहने की शिक्षा देते रहे।

केदारनाथ अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं रचना प्रकिया
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)
को
पी-एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध
सन - 2002
पंजीकरण सं०:....................
निर्देशक
डॉ० अनिल सिंह
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
श्री गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मालटारी, आजमगढ़
शोधार्थी :
रागिनी राय
हिन्दी विभाग
श्री गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मालटारी, आजमगढ़
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)

रागिनी राय (2002) ने “केदारनाथ अग्रवाल: व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया” नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—

- केदारनाथ अग्रवाल जी का व्यक्तित्व बिल्कुल स्वच्छ, सरल व आकर्षक है।
- अग्रवाल जी भी प्रकृति के अति घनिष्ट व प्रबल समर्थक कवि हैं जिन्होंने प्रकृति से संबंधित अनेक कविताओं का वर्णन किया है।
- इनकी प्रमुख रचनाएँ ‘युग की गंगा’, ‘नींद के बादल’ ‘फूल नहीं बोलते हैं’ की भूमिका में कवि ने स्वीकार किया है कि प्राचीन तीनों काव्य संग्रह अब उपलब्ध नहीं हैं जिसमें प्राचीन संकलनों की कमी पूरी हो जाती है।
- काव्य प्रकृति के अनुसार ‘नींद के बादल’ कृति इनके छायावादी कवि के रूप का दर्शन कराती है।
- इस संग्रह की रचनाओं में प्रणय की भावनाएँ हैं कवि ने स्वीकार किया है कि इस संग्रह में वैयक्तिकता अधिक है।
- प्रणय संबंधी अपने भावों विचारों और कल्पनाओं को काव्य में पूर्ण सत्यता के साथ प्रकट करके कवि ने विचारों में भी सच्चाई का बोध कराया है।
- इस युग में अन्य कवियों की भांति केदार जी ने भी अनेक सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है।
- साम्राज्यवादी दमन चक्र और उधार ली गई सभ्यता के प्रति भारतीय जनता के प्रति अंग्रेजों की शाक्य नीति ने देश की आर्थिक जनता के प्रति अनेक संवेदनाएं प्रकट की हैं।
- प्रगतिवाद की व्यापक दृष्टि में परंपरा और प्राचीन संस्कृति के महत्व के प्रति भी एक संतुलित उत्साह को दर्शाया गया है।

- युगों से प्रभावित लोक जीवन की वेगमति धारा के प्रगतिवादी काव्य में जितना महत्व प्रदान किया गया है उसे देखते हुए प्रगतिवादियों की जैन रुचि पर भी प्रकाश पड़ता है।
- केदारनाथ जी प्रगतिवाद के जनप्रिय कवि हैं।
- प्रतिवादी काव्य में चित्रित लोक जीवन पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि यह आंदोलन कविता के केवल नए पुष्प या नए शिल्प मात्रा पर ही आधारित नहीं है।
- वास्तव में प्रगतिशील कविता प्रथम बार संबंध जीवन को मापने का प्रयास करती हुई अपनी परिधि लोक के साथ आलोक को भी समेट चुकी है।

उमाकांत खरे (2005) ने "बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि पं० घासीराम व्यास के योगदान" नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—

बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि
: पं० घासीराम व्यास का योगदान :
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
पी०एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ. प्र.)
2005

व्यास जी तत्कालीन क्रांति एवं राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित रहे हैं और उनकी रचनायें भी राष्ट्रीय आंदोलन तथा समसामयिक मानवीय समस्याओं से प्रेरित रही हैं, उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास का पूरी तरह अध्ययन किया था। वे रीति, भक्ति एवं क्रांतिकारी साहित्य से प्रभावित हुये बिना नहीं रहे। उन्होंने एक और रीति विषयक अचार्यत्व का निर्वाह किया तो दूसरी ओर गांधीवाद, राष्ट्रीयता तथा क्रांतिकारी भावना से प्रभावित होकर तत्सम्बन्धित काव्य रचनाएँ भी की। लोक साहित्य का सृजन कर लोक कवियों को प्रेरित और प्रभावित भी किया।

उनके प्रयत्नों से बुन्देलखण्ड कवि मंडली की स्थापना हुई, तत्कालीन साहित्य सेवी इस प्रतिद्वन्दिता से न केवल प्रोत्साहित हुये वरन् समसामयिक एवं छंदबद्ध रचनाएँ करने में पारंगत भी हुये इस प्रकार से इस क्षेत्र में कवि दंगलों की भरमार आ गई और साहित्य सेवी अपनी-अपनी रचनाओं से जन-समुदाय को प्रभावित करने लगे। जनकवि के रूप में व्यास जी की ख्याति बुन्देलखण्ड के ग्रामों- ग्रामों में फैल गयी, हजारों लाखों व्यक्तियों ने इन काव्य दंगलो से प्रेरणा ग्रहण की तथा अनेक कवियों का आविर्भाव भी इसी माध्यम से हुआ।

व्यास जी अपनी शैली के कुशल एवं पारंगत कवि रहे। तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों में उनका सक्रिय योगदान रहा। उन्होंने जेल यात्रायें भी की, अंग्रेज सरकार के दमन को भी सहा है, 39 वर्ष की अल्प अवस्था में उन्होंने हैरत अंगेज राष्ट्रीय कार्य किये। जेल जीवन में भी उन्होनें अपनी अमूल्य रचनाएँ लिखीं। राष्ट्रीय नेताओं के निरन्तर सम्पर्क में रहे, स्वतंत्रता आन्दोलन, अछूत आन्दोलन, किसान आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन तथा अन्य राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेकर अपना एक राष्ट्रीय इतिहास निर्मित किया। महात्मा गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और न्याय के सिद्धान्त से भी थे प्रभावित रहे। उनके अनुयायी होने का उन्हें गर्व था। अहिंसात्मक सत्याग्रहों में ही उन्हें विशेष रूचि थी, इसके लिये उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

सिंह (1998) सत्यनारायण ने "हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य की देन" नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—

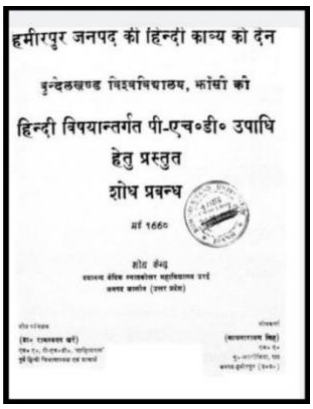
हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य की देन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी की

हिन्दी विषयान्तर्गत पी-एच०डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

- इस शोध-प्रबंध में हमीरपुर जनपद के 'हिंदी काव्य की देन कियान्तर्गत जनपद के उन ज्ञात-अज्ञात कवियों को स्थान दिया गया है, जो अब तक हिंदी साहित्य के लिये अनजान रहे हैं। इस जनपद की प्रत्येक तहसील में हिंदी के विद्वान कवि हुए और आज भी विद्यमान है। इस जनपद के कवियों की यह विशेषता है कि उन्होंने केवल खड़ी बोली में ही काव्य सृजन नहीं किया अपितु जनपद के जन-जन में बोली जाने वाली बुन्देली में उत्कृष्ट काव्य सृजन करके बुन्देली को साहित्यिक जगत में सम्मानजनक स्थान दिलाया है।
- बुन्देली में उच्च कोटि का काव्य सृजन करने वाले वर्तमान काल के कवियों में तहसील राठ के स्व० डा० हरगोबिन्द सिंह, श्री रामखिलावन निरंजन व पं० रामसनेही तिवारी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।
- बुन्देली में लिखी गयीं ये पुस्तकें हिंदी काव्य साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। सन् 1959 में प्रकाशित फाग मंजरी, सन् 1966 में घाघ की शैली में रचित छक्का पचीसी, सन् 1980 में प्रकाशित पुष्पांजलि, 1978 में सद्वाक्य मंजरी तथा सन् 1990 में सद्विचार सतसई कुछ ऐसी काव्य कृतियां हैं जिनसे वर्तमान पीढ़ी के कवि मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। बुन्देली शब्दावली पर डा० हरगोबिन्द सिंह द्वारा लिखा गया वृहद शोध-ग्रन्थ तो बुन्देली साहित्य के लिये एक मील का पत्थर है। डा० सिंह के अतिरिक्त उपयुक्त वर्णित अन्य कवियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान किया है।
- तहसील कुलपहाड़ के स्व० खोतसिंह यादव, तहसील महोबा के श्री भारतेन्दु अड़जरिया व श्री शिवशंकर दयाल रिछारिया, तहसील चरखारी के स्व० ख्यालीराम व श्री कालका प्रसाद सक्सेना मकरंद ने भी बुन्देली के काव्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। प्राचीन कालीन कवियों में से तो लगभग सभी कवियों ने अपने काव्य सृजन में बुन्देली को ही विशेष महत्व दिया है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में हिन्दी नवजागरण और कवि मैथलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत कि कविताओं मानवतावाद एवं प्रकृति चित्रण का अध्ययन, केदारनाथ अग्रवाल:व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया, बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि पं० घासीराम व्यास का योगदान, हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य की देन नामक शोध पर कार्य किया गया, किन्तु **प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

श्री प्रद्युम्न कुमार सिंह: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 बाल्य जीवन:

प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का जन्म फतेहपुर जिला के घोषी नामक गाँव में सन 1976 में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री कन्हाई लाल सिंह है। आपका गाँव दो आब (गंगा-यमुना) के बीच में स्थित है। यह क्षेत्र अपनी कृषि के लिए पूरे भारत में जाना जाता है। गंगा-यमुना अत्यधिक नजदीक बहने के कारण गाँव में इसकी शीतलता निरन्तर बनी रहती है।

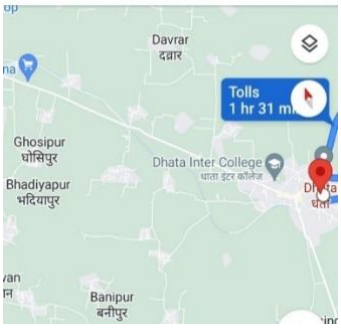

आप प्रतिदिन नदी के पास बैठने लगे और इसी तरह धीरे-धीरे प्रकृति के प्रेमी बन गए और आपको चिन्तन करने की शक्ति प्रकृति से मिली। अन्तर्मुखी स्वभाव होने के कारण आपका चिन्तन मन के अन्दर ही चलता रहा। अन्ततः आपके चिन्तन का बीज स्नातक के बाद फूटा।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा पास के ही गांव शुकुलपुर में सम्पन्न हुई जिसे हरदासपुर के नाम से भी जाना जाता है।

3.2 वंश परम्परा:

आपके पितामह घोषी गांव के जमीदार थे। जिनका नाम राजाराम सिंह था। उनके दो पुत्र थे। इन्द्रनारायण सिंह एवं रामफल सिंह।

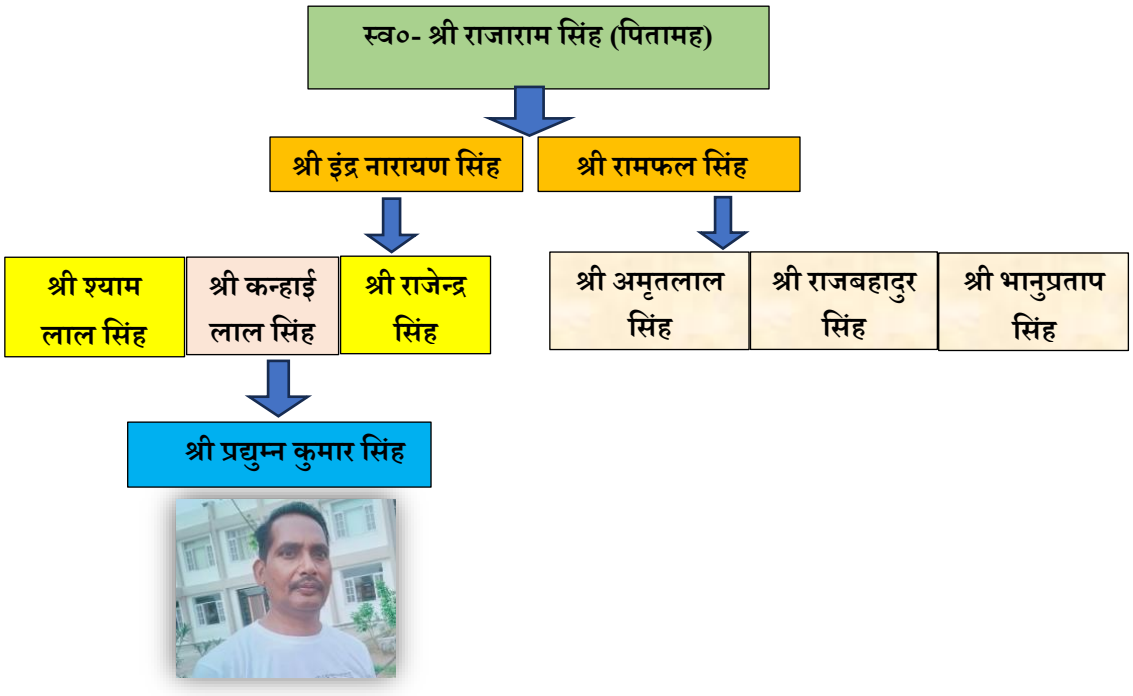

इन दोनों के तीन-तीन पुत्र थे। इनमें से इनका जन्म इन्द्रनारायण सिंह के मझले सुपुत्र श्री कन्हाई लाल सिंह जी के घर में हुआ था।

पूर्वज आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व गुजरात के चन्दन नगरिया नामक गाँव से आए, जो फतेहपुर के धाता कस्बे के पाँच गाँवों में आकर बसे, ये गाँव हैं धाता, घोसी, अढ़ौली, जयरामपुर (गुरगौला) एवं सलेमपुर। इनका विस्तृत इतिहास धाता की एक पुस्तक में संग्रहीत है, जिसमें प्रत्येक वर्ष इतिहास जोड़ा जाता है जब इनके पूर्वज यहाँ पर आए तो इन गाँवों के मुखिया (चौधरी) स्वीकार कर लिए गए। इस तरह तब से लेकर आज तक इन गाँवों में इन्हें चौधरी की उपाधि के नाम से पुकारा जाता है, जिस कारण आपके नाम के पहले चौधरी उपाधि लगायी जाती है और आप मूलतः कुर्मी (पटेल) बिरादरी से सम्बन्धित हैं।

3.3 व्यक्तित्व:

आप बचपन से ही स्वभाव से बड़े सरल और सीधे थे। किसी प्रकार का दोष व गलत संगति नहीं थी। आपकी मित्रता भी सहज ही अच्छे लोगों से हो जाती है आप स्वावलम्बी व कर्तव्यनिष्ठ होने के साथ-साथ धैर्यशाली भी हैं आपने सदैव अपने माता-पिता व गुरुओं के प्रति सही धारणा रखी। तथा आपके प्रति आपके गुरुओं व मित्रों का सदैव सहयोग रहा है। आप प्रखर प्रतिभाशाली समयनिष्ठ रहे। आप में कार्य के प्रति लगन व निष्ठा कूट-कूट कर भरी है। आप गहन चिन्तनशील व्यक्ति हैं।

3.4 अध्ययन और अध्यापन/सेवा योजन कार्य:

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा बगल के गाँव शुकुलपुर जिसे हरदासपुर भी कहते हैं। कक्षा एक से पाँचवी तक की शिक्षा प्राथमिक विद्यालय में एवं 6 से 8 तक की सरदार वल्लभभाई पटेल उत्तर माध्यमिक विद्यालय, शुकुलपुर में हुई। सन् 1991 में हाई स्कूल की शिक्षा धाता इण्टर कॉलेज, धाता में हुई तथा 1995 में इंटरमीडिएट की शिक्षा श्री दिलीप सिंह इंटर कॉलेज, इलाहाबाद (पूर्व में कौशांबी) में हुई तथा 1998 में पूर्व में ऑक्सफोर्ड कहे जाने वाले इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी, संस्कृत एवं शिक्षा शास्त्र इन विषयों के साथ स्नातक की शिक्षा पूर्ण की। सन् 2000 में सम्पूर्णानन्द

विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध श्री सच्चा आश्रम महाविद्यालय, औरैल से बी० एड० की डिग्री सम्पन्न हुई। आपने सन् 2001 में इलाहाबाद वि०वि० से एम० ए० (संस्कृत) तथा 2005 में छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर से एम० ए० (हिन्दी) की उपाधि प्राप्त की। सन् 2003 में प्रथम पाली में T.G.T. हिन्दी की परीक्षा और उसी दिन द्वितीय पाली में M.B.A की प्रवेश

परीक्षा दी। परिणाम दोनों परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। लेकिन आपने T.G.T. में नियुक्ति नहीं ली। कारण M.B.A हेतु गाजियाबाद के AIM में प्रवेश लिया और साथ में ही आप हिन्दी प्रवक्ता की तैयारी करते रहे अंततः वह दिन आया और आपने वर्ष

2004 की उ० मा० शि० सेवा० चयन बोर्ड की हिन्दी से टी०जी०टी० परीक्षा दी और उसमें सफलता प्राप्त कर पहली बार ही श्री ज्वाला प्रसाद इण्टर कॉलेज, बबेरू में नियुक्त हुए और अब निरन्तर अध्यापन कार्य उसी विद्यालय में चल रहा है और आप कुछ वर्षों से स्काउट गाइड के विभाग में भी कार्यरत हैं। आप दोनों विभाग भली भांति चला रहे हैं। आपका इस विद्यालय में काफी योगदान है।

3.5 गृहस्थ जीवन:

B.Ed में प्रवेश लेने के साथ-साथ T.G.T. की भी तैयारी चल रही थी उसी दौरान सन् 2000 में आपका बड़ी सहजता से ही विवाह सम्पन्न हुआ और आपने गृहस्थ जीवन स्वीकार किया। आपका गृहस्थ जीवन बहुत सरल व सुखमय रहा। आपकी पत्नी श्रीमती गायत्री सिंह जी हैं जो बहुत ही सुशील स्वभाव की हैं। अति सरल स्वभाव होने के कारण वह आपका हमेशा सहयोग करती है और आपके अध्ययन कार्य में वह कभी भी बाधक नहीं बनीं।

3.6 लेखन प्रेरणा स्रोत दृश्यांकन: अल्लापुर, प्रयागराज में मद्रास होटल के सामने मित्र के रूम में चार बजे चर्चाओं के दौरान निबन्ध माला (अप्रकाशित) का विवेचन हुआ।

नियमित लेखन-2012

दक्षिण भारत में घटी घटना पर मित्र उमांशकर परमार से बबेरू में रिंकू की होटल में चाय पर चर्चा में आपके द्वारा कहा गया यदि थानेदार होता तो यह घटना न होती इस सूक्ति वाक्य को सुनकर मित्र उमाशंकर ने कहा यार भाई लेखन संगठन से जुड़ते हैं और कुछ लेखन कार्य करते हैं हम दोनों ने जनवादी लेखक संघ इकाई बाँदा के सदस्य बने। जिसमें केशव तिवारी जिला अध्यक्ष उमाशंकर परमार को जिला सचिव और आपको कोषाध्यक्ष बनाया गया। 2014 में हुए जनतान्त्रिक चुनाव में उमा शंकर परमार को बतौर अध्यक्ष और आपको जिला मंत्री पद प्रदान किया गया साथ ही मुरादाबाद में होने वाली बैठक मैं बाँदा से तीन लोगों को (श्री केशव तिवारी जी , श्री उमाशंकर परमार जी और प्रद्युम्न कुमार जी) को राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में चयनित किया गया।

नवरात्रि के अंतिम में मूर्ति विसर्जन का समय था। इस समय नशे में धुत एवं आस्था के सैलाब में बहते हुए लोगों को (मूर्ति विसर्जन) हेतु जाते हुए बेहद से दृश्य देखकर मन में विचार आया क्यों नहीं इस तरह के गलत करने का सकारात्मक रूप में लोगों के समक्ष रखा जाए तब पहला लेख मूर्ति विसर्जन का उचित एवं उससे होने वाले परिणामों पर शोधात्मक लेख लिखे जो कई पत्रिकाओं के साथ-साथ जेपी शर्मा में इण्टर कॉलेज बबेरू (2006) की पत्रिका "ज्वाला" में भी छपा।

जनवादी लेखक संघ की स्थापना 1918 के उत्तरार्द्ध में बाँदा में जनवादी लेखक मंच की स्थापना की गई जिसमें बतौर सचिव आपको नामित किया गया जो अद्यतन चल रहे हैं।

3.7 रचनाएँ:

निबंध संग्रह—दुनिया इन दिनों (अप्रकाशित), मूर्ति पूजा एवं औचित्य (ज्वाला पत्रिका में प्रकाशित)

आलोचना–युगसहचर, सुधीर सक्सेना, समीक्षा–लोकोदय, लोक विमर्श, जनसंदेश, पत्र, व्यंग–यम च चन्द्र, पाकेट बुक , बैताल के सुलगते प्रश्न (अप्रकाशित), साक्षात्कार–लहक, प्राची, कहानी–जबरापुर, बिखरते रिश्ते (अप्रकाशित), कविता–कुछ भी नहीं होता अनन्त (पहली कविता)

वर्तमान में आपकी तीन पत्रिका:

1- प्रवास नामा (बांदा सहसंपादन)

2- लोकोदय (सहसंपादकन)

3- लोक विमर्श (संपादन)

जनवादी लेखक मंच की कार्यकारिणी— उमाशंकर सिंह परमार अध्यक्ष प्रद्युम्न कुमार सिंह सचिव जवाहर लाल 'जलज' वरिष्ठ उपाध्यक्ष, गोपाल गोयल उपाध्यक्ष रामऔतार साहू संरक्षक नारायण दास गुप्त कोषाध्यक्ष काली चरण सिंह राजपूत मीडिया प्रभारी।

प्रारम्भिक दौर में जनवादी लेखक संघ के सदस्य थे ये सभी केशव तिवारी अध्यक्ष, उमाशंकर सिंह परमार सचिव, प्रद्युम्न कुमार सिंह कोषाध्यक्ष, नारायणदास गुप्त मीडिया प्रभारी कालीचरण राजपूत प्रचार प्रसार विभाग, जवाहर लाल जलज उपाध्यक्ष, रामऔतार साहू उपाध्यक्ष, अरुण खरे सदस्य, गोपाल गोयल सदस्य और नरेन्द्र पुण्डरीक सदस्य आदि।

भाषा–खड़ी बोली (हिन्दी)

शैली–मुक्तक

3.8 पुरस्कार:

1- निर्भीक कलम का साहित्य रत्न

2- भाषा रत्न 2020

3- राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन बांदा 14 सितम्बर 2020 को प्राप्त हुआ।

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

4.1 प्रकाशित पुस्तकें

4.1.1 शब्द-शब्द प्रतिरोध

साहित्य प्रतिरोध एक सशक्त काव्यधारा की चली आती हुई परम्परा है जिसका निर्वहन करना जागरूक कलमकारों के लिए बेहद जरूरी है। साहित्य में प्रतिरोध सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक असमानता के कारण उपजता है। कविता की मूल आत्मा लोक कल्याण है। वही कविता कालजयी बन पाती है जो लोक से जुड़ी रहकर हाशिए की आवाज उठाए। प्रतिरोधी अभिव्यक्ति की रचनाएँ हाशिए के समाज की सदियों से दबाई गयी निर्बल की अभिव्यक्ति की हुँकार बनकर शोषक वर्ग के विरुद्ध क्रान्ति का उद्घोष करती हैं।

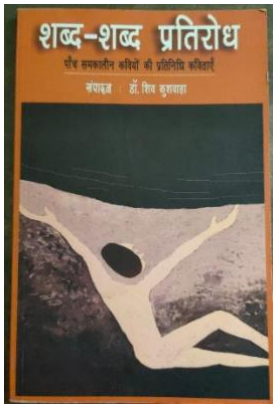

यह काव्य संग्रह आज के सामयिक समय का प्रतिरोधी दस्तावेज है। भारतीय सभ्य समाज की विचारधारा का विद्रूप चेहरा गैर बराबरी के आइने में बखूबी देखा जा सकता है जहाँ जाति और वर्ण मनुष्य का ओहदा तय करते हैं और योग्यता को दरकिनार किया जाता है। समाज आज 21वीं सदी के द्वार पर खड़ा है लेकिन हमारा समाज आज भी आदिम जिजीविषा के साथ जी रहा है। सदियों से चली आती घिसी-पिटी दकियानूसी श्री तपरम्पराओं को ध्वस्त करने की जगह उन्हें सहेजने में लगे श्रेष्ठ होने के दम्भ में जी रहे लोग न जाने कब समझेंगे कि मनुष्य के साथ भेदभाव करना असंवैधानिक है क्योंकि देश अब संविधान से चलता है।

इस काव्य संग्रह में जिन कवियों की रचनाएँ संकलित हैं वे आज की समकालीन काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवि हैं। समाज में हो रही उथल-पुथल को गहराई से महसूस करते हुए यह कवि केवल रचना शब्द शब्द प्रतिरोध लिखते ही नहीं वरन समय से आँख मिलाकर संवाद करते हैं। जहाँ कहीं भी गलत है उस पर गंभीर सवाल करते हैं। इनकी कविताओं का आस्वाद साहित्यिक धरातल पर यथार्थी परम्परा का अन्वेषण ही नहीं करती बल्कि व्यवस्था से सीधे-सीधे विद्रोह करती हुई हाशिए के समाज के अधिकारों की पैरोकारी करती हैं।

'शब्द शब्द प्रतिरोध' के कवियों की रचनाएँ सामाजिक सरोकार को सहज ढंग से प्रस्तुत करती हैं। ये कविताएँ समाज में घटित हो रहे

सामयिक वातावरण पर सटीक और सारगर्भित अभिव्यक्ति की अभिव्यंजना को ध्वनित ही नहीं करतीं वरन वर्तमान से आगे की समस्याओं से सावधान भी करती हैं। सरोकार को जीने वाले ये पाँचों कवि कविता के मंझे हुए कलमकार हैं।

कविता की गहरी समझ और समय की सही पड़ताल करने वाले समकालीन महत्वपूर्ण कवि आर डी आनन्द दलित साहित्य के क्रांतिधर्मी कवि, आलोचक और विचारक हैं। उनकी कविता की खास बात यह है कि कविता पढ़ते समय कवि समय से प्रभावी संवाद करता दिखता है। इनकी कविताएँ जहाँ आक्रोशपूर्ण शैली में वर्ण व्यवस्था को कोसती हैं। वहीं समाज में समता के लिए समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। अम्बेडकरवादी विचारधारा और मार्क्सवादी विचारधारा के सेतु बनकर उभरने वाले साहित्य के वे विरले कवि हैं।

जनवादी कविता के समकालीन हस्ताक्षर कवि प्रद्युम्न कुमार सिंह प्रगतिशील चेतना के सशक्त वाहक हैं। उनकी कविता के दायरे में उत्तरआधुनिक मूल्य से लेकर लोक की गहरी संचेतना परिलक्षित होती है। बदल रहे समाज और राजनैतिक परिदृश्य पर पैनी नजर रखने वाले कवि प्रद्युम्न जी की प्रतिरोधी विचारधारा की कविताएँ बेहद तल्ख मिजाज की हैं। आज के दौर में उनकी लेखनी सरोकार का जो रूप प्रस्तुत कर रही है वह आने वाले समय में साहित्य का प्रबल अवलम्ब बनेगी।

महानगरीय बोध से दूर ग्राम्य अंचल के समकालीन कवि अरविंद यादव की कविताएँ प्रतिरोध के नए तेवर से अवगत कराती हैं। समय के साथ चलते हुए समय को कविता में बाँधना ही कवि की पहचान है।

कविता जब कवि की पहचान बन जाती है तो स्वतः कवि का चेहरा सामने आ जाता है। कवि की पहचान पीछे चलती है और कवि की कविता आगे। उनकी कविताओं में प्रतिरोध का स्वर भी प्रखर रूप में उभरकर सामने आता है।

अरविंद भारती दलित साहित्य के सम्भावनाशील युवा कवि हैं। इनकी कविताएँ दलित जीवन की जीवन्त दस्तावेज हैं। स्वानुभूति की गहराई से उपजी इनकी कविताएँ सीधे-सीधे समाज की विघटनकारी शक्तियों से टकराती हैं। समाज में धर्म, जाति और गैर बराबरी के खात्मे के लिए इनकी कविताएँ निरन्तर युद्ध जारी रखती हैं। सरोकार की पैनी धार शब्द- शब्द में अनुगुंजित करने वाले यह कवि अपने समय को बखूबी प्रस्तुत करने में सफल हैं।

अन्त में मेरी रचनाएँ अर्थात् शिव कुशवाहा की रचनाएँ हैं। जो रचनाएँ मैंने इस संग्रह में रखी हैं वे समय के साथ सरोकार करते हुए प्रतिरोध की परम्परा को आगे बढ़ाने में प्रतिबद्ध हैं। प्रतिरोध के इस महादमनीय युद्ध में वरिष्ठ कवि आर डी आनन्द, प्रद्युम्न कुमार सिंह, अरविंद भारती और अरविंद यादव के साथ मैंने भी इस संग्रह में देने का प्रयास किया है।

कुछ सार्थक रचनाएँ , काव्य संग्रह 'शब्द-शब्द प्रतिरोध में पाँच समकालीन कवियों आर डी आनन्द, प्रद्युम्न कुमार सिंह, अरविंद भारती, अरविंद यादव और शिव कुशवाहा की रचनाएँ संग्रहीत हैं। साहित्य के सुधी पाठक, कवि और आलोचक इनकी कविताओं से रूबरू होंगे तथा इनके प्रतिरोध का सम्यक मूल्यांकन करेंगे। आशा है ये कविताएँ समय और उसके प्रतिरोध को रेखांकित करने में सफल होंगी|

टस से मस नहीं होती हैं

धर्म मुर्गे की तरह बांग देता है।

चोरी, राहजनी, व्यभिचार, बलात्कार,

किडनैपिंग, हत्या, आतंक, घोटाला,

प्रायोजित है

सारे मज़लूम सारे मज़दूर

चंद पूँजीपतियों, चंद नेताओं, चंद ब्यूरोक्रेट्स को जिम्मदार ठहराते हैं।

4.1.2 खुशबू की तलाश में गुलमोहर

"खुशबू की तलाश में गुलमोहर' यह एक अभिनव प्रयोग है जिसमे में 17 कवियों की कविताओं को सम्मिलित किया गया है। इसमें वरिष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं के साथ ही नवोदित रचनाकारों की रचनाओं को समाहित किया गया है। छन्द मुक्त ही नहीं गीत विधा की रचनाओं के माध्यम से समृद्ध बनाने वाले कवियों को भी रखने का प्रयास किया गया है। साझा काव्य संग्रह लाने का उद्देश्य मात्र कवियों की संख्या बढ़ाकर प्रसिद्धि पाना नहीं था बल्कि पुरानी पीढ़ी के कवियों के साथ साथ नई पीढ़ी के युवाओं की प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करना भी रहा है। जिसे अमलीजामा पहुँचाने का कार्य कामायनी प्रकाशन प्रयागराज ने अपने हाथों में लिया है। भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम कविता होती है आचार्यों ने इसी बात को ध्यान में रखकर 'वाक्यं रसात्मकं काव्य' कहकर इसे स्वीकार किया है।

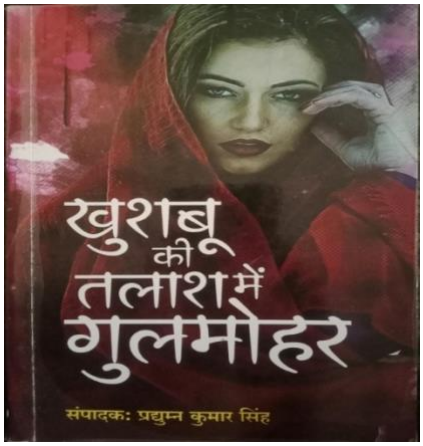

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समय-समय पर साहित्य की अनेकानेक धारायें लोक को आप्यायित करती रहीं हैं। जिनका निर्वहन करना एक जागरुक साहित्यकार के लिए बेहद जरूरी है। प्राचीन काल में कवि स्वान्तः सुखाय के लिए रचनाएं रचता था और प्राकृतिक घटनाओं परिघटनाओं के साथ-साथ सामाजिक राजनैतिक आर्थिक एवं आध्यात्मिकता को अपनी रचनाओं का आधार बनाता था। क्योंकि उसका उद्देश्य हमेशा से अपनी रचना को लोकोन्मुखी बनाना रहा है। इस काव्य संग्रह में जिन कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है वे सभी आज की समकालीन काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवि हैं। समाज में हो रहे परिवर्तन एवं उसके प्रभाव को गहराई से महसूस करते हैं। ये कवि मात्र कविताएं लिखते ही नहीं हैं वरन् समय से संवाद भी करते हैं। वे वाजिब सवाल और जवाब भी करते हैं। इनकी रचनाएं सर्जना का नया प्रकाश उत्सर्जित करती हैं। और जरूरत पड़ने पर विद्रोह की तलवार ले अत्याचारियों के विरुद्ध मैदान में उनके दमन के प्रति जागरूक दिखती है। सामाजिक सरोकारों को सहज ढंग से उकेरती ये रचनाएं समाज में घट रहे घटनाक्रम की सटीक अभिव्यक्ति के रूप में हमारे सामने सदैव उपस्थित रहती हैं।

4.1.3 प्रेम पाखी सुनो

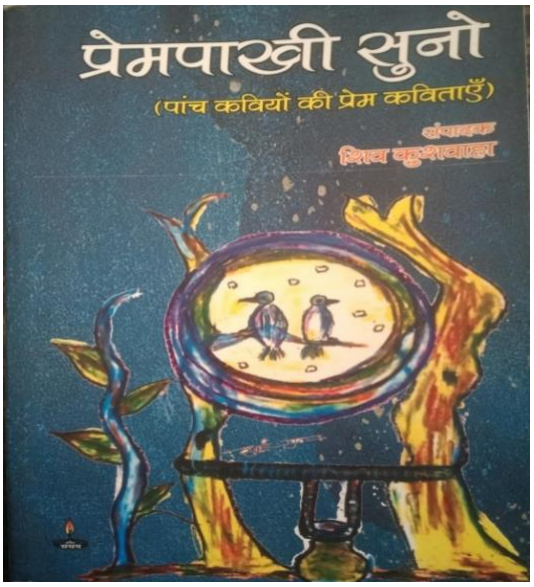

('प्रेमपाखी सुनो' काव्य संग्रह पर अपनी बात...) कविता कवि के हृदय में जन्म लेती है इसलिए मनुष्य मात्र के हृदय को स्पर्श करती है। कवि की आत्मानुभूति से कविता का प्रसव होता है और वह अन्तर का भेदन करती हुई इस लोक को करुणामय, प्रेममय बनाती है, आचार्य भवभूति ने इसीलिए कविता को करुणा से परिपूर्ण माना है। जब सारा संसार थक जाता है तब केवल कविता ही आनंदलोक के दर्शन कराकर उसकी श्रांति क्लांति हर लेती

प्रेम और करुणा अन्योन्याश्रित हैं। जहाँ प्रेम है वहां करुणा है और जहाँ करुणा है वहां प्रेम है। प्रेम का आविर्भाव सघन संवेदना के विरल क्षणों में होता है। प्रेम की भाषा वर्ण शब्द के पार है क्योंकि प्रेम निःशब्द है। यह व्यक्त करने की नहीं, अनुभव करने की वस्तु है। प्रेम रहित मनुष्य केवल पाषाण है, निर्जीव है। जिजीविषा को केवल प्रेम ही आशान्वित करता है। यह दुनिया की श्रेष्ठ विभूतियों में एक है।

साहित्य में प्रेम को हमेशा प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य में प्रेम संबंधी आख्यानों का लंबा सिलसिला है जो अविच्छिन्न रूप से आगे हिंदी साहित्य तक चला आया है, फलतः हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। काव्य में प्रेम कहीं लौकिक होकर व्यक्त हुआ है और कहीं अलौकिक। इससे भी इतर जाकर रीतिकालीन कवियों ने प्रेम को घोर श्रृंगारिक रूप में प्रस्तुत किया। हिंदी की रीतिमुक्त परंपरा में प्रेम का उदात्त रूप भी प्रकट हुआ, जहां कवि प्रेम को तलवार की धार पर चलने के समान बताते हैं- 'प्रेम को पंथ कराल महा, तलवार की धार पे धावनो है।'

हिंदी की आधुनिक कविता में प्रेम का स्वरूप परिवर्तित होकर विभिन्न आयामों में प्रवाहित हुआ। प्रेम केवल व्यक्तिनिष्ठ ही नहीं रहा वरन कवि प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर प्रकृति प्रेम में डूबता उतराता रहा।

इस साझा काव्य संग्रह के पांचों कवि मूलतः सामाजिक सरोकार को रचने वाले प्रतिरोधी विचारधारा के पोषक रचनाकार हैं। इनकी कविताओं ने अपने समय और समाज का अपनी सजग-सतर्क काव्य-चेतना के अलग-अलग कोण से रूप-रेखांकन किया है। इन कवियों की कविताओं ने अपने समय में प्रेम को भी अभिव्यक्त किया है जबकि, अक्सर लोग यही सोचते हैं कि प्रतिरोध और सामयिक मुद्दों पर लेखन करने वाले कवि/लेखक क्या प्रेम पर भी लिख सकते हैं।

आज की समकालीन कविता में 'प्रेमपाखी सुनो' के पांच कवि (आर डी आनंद, दिलीप दर्श, प्रद्युम्न कुमार सिंह, अरविन्द भारती, शिव कुशवाहा) अपनी अलग-अलग प्रेम-अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं। इन कवियों की अनुभूतियां बहुत ही गहरी हैं। यह अनुभूतियां कहीं पर लौकिक हैं, कहीं पर प्रकृति के साथ आत्मपरक, कहीं पर लोक प्रेम, कहीं पर अस्वीकृति और कहीं संवेदना के गहरे-धरातल पर संचरण करती हुई प्रवाहित होती हैं।

खुशबू की तलाश में गुलमोहर

उसका अपना राग है

अपना रंग भी है।

"पर उसे नहीं पता

कितनी उसमें गन्ध है

हरसिंगार की खुशबू से

इतराती रात

चमेली के पुष्पों के

सौरभ से

झूमती फिजाएं

कराती है हर पल

अपनी

सुरभि का एहसास

जबकि रंगों की आब में खोया गुलमोहर

ढोता है नित्य

खुशबू की बंजरता का बोझ फिर भी किसी के मन में

पनपते है उम्मीदों के

कुछ बीज खोजते रहते हैं जो

सौरभ के मधुमास

सहते हुए ना पनपने की भयंकर पीड़ा

जिसे मुश्किल से सहती है।

धरती माया और आँखों से बहते हुए।

अश्रुओं के साथ।

आकाश भरता है गहरे उच्छवास।

4.2 प्रकाशित कविताएँ

4.2.1 अब छोड़नी होगी

अब छोड़नी होगी'

अपनी स्वामिभक्ति फिर से फूँकना होगा

अन्याय और षड़यन्त्र के विरूद्ध

संघर्ष का बिगुल

फिर से परिभाषित करने होंगे

स्वामिभक्ति के हानि लाभ

हटानी होगी

चमकीले पोस्टरों से

खुद की नज़र।

मज़हबी आग में झुलसती बेतरतीब

दुनिया का अक्स

सीखना होगाहकीकत और फरेब के

अन्तर क समझनी होगी

नफ़रत और प्रेम के बीच की खाई

मिटानी होगी

नफ़रती आग

जिसमें झुलसकर तबाह

हो चुके हैं

तुम्हारे और हमारे घर

यदि तुम अब भी खामोश रहे

तो समझ लो

ही संततियाँ नकार देंगी

और तुम चाहकर भी

नहीं बचा पाओगे खुद को

4.2.2 शब्दों के संवाहक

वे शब्दों के संवाहक

वाग्जाल उनकी ताकत

वे अपनाते हैं

मोह माया के तीखे हथियार

धरम करम की माला उनकी

माथे झलकती फकीरी

राहु-केतु से ढोर डंगर तकुए से नथुने उनके

जार जार बोली उनकी

वे शब्दों के संवाहक

शब्दजाल उनकी ताकत

भांति-भांति के उनके हथ कण्डे ध्वजा थामलहराते

शिखा संग अलके लहराती

जैसे दीपक संग लहराता दीप पतंगा

सहज में भी वे अचरज भर

नूतन की नव आहें भरते

वे शब्दों के सवाहक

वाग्जाल उनकी ताकत

खरे वक्त की उनको पहचान

मनकों में भी सीस भरते

रंग विरंग उनके रक्षक

भाँति भांति की उनकी थाती

परिधान में शक्ल छुपाते अपनों

संग अपनी गाते

वे शब्दों के संवाहक

वाग्जाल उनकी ताकत

4.2.3 कमाल के लोग है

कमाल के लोग हैं
कोई चश्मा लेकर
कोई लाठी की
कोई विरासत की चाबी लेकर
अनुयायी बनने का
रचता है स्वांग
स्वच्छता की अलख
जगाता
सत्य अहिंसा का महामन्त्र ले
नतमस्तक विश्व धरा
साध रहे सभी साध्यों संग
नवरूप
यद्यपि गांधी, थाती नहीं
किसी की
ना ही है जागीर
फिर भी जागीरदार और
ठेकेदार बनने की होड़ में
ठग रहे हैं
खुद ही खुद को लोग

4.2.5 एक हारा हुआ व्यक्ति

एक हारा हुआ व्यक्ति
जीत के स्वप्न
देख सकता है।
उन्हें पूरे करने का
प्लान बना सकता है।
लोगों को भरोसा दिलाने का
पूर्ण प्रयास कर सकता है।
अपनी इच्छाएँ आकांक्षाएँ
गुप्त रख सकता है।

अपनी कमजोरियाँ
छिपाने के सारे प्रयास कर सकता है
लेकिन वह सुकून से
बैठ नहीं सकता है
क्योंकि हार का दंश उसे
बैठने नहीं देता
और पूर्व की खुशी
उसे जीने नहीं देती

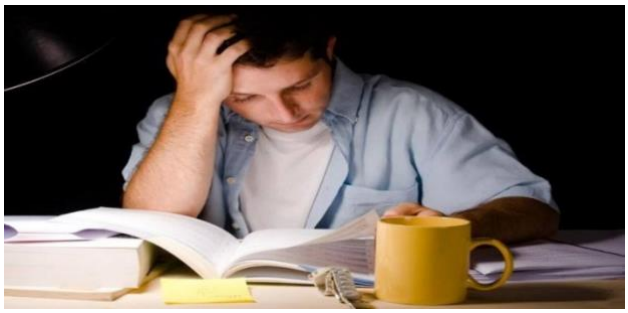

4.2.5 आओ मुझे माँजो

आओं मुझे माँजो
जैसे एक किसान मांजता है
अपने खेतों को
औरतें मांजती हैं। अपने घर को
संत मांजता है अपनी बुद्धि को
बूढ़े मांजते हैं समय को
ओ दुःख! उसी तरह
तुम भी मुझे माँजो
आओ मुझे माँजो
जैसे लोहार माँजता है
लोहे को सुनार माँजता है सोने को
वास्तुकार माँजता है। अपने वास्तु ज्ञान को
गुरु माँजता है अपने शिष्य को
चित्रकार माँजता है। अपने चित्रों को
गीतकार माँजता है अपने स्वरों को
और साहित्यकार माँजता है
अपने साहित्य को
ओ दुःख ! उसी तरह तुम भी मुझे माँजो
क्योंकि मुझे पता है वस्तुएं
मांजने से ही चमकती हैं और
न मांजने से स्याह।

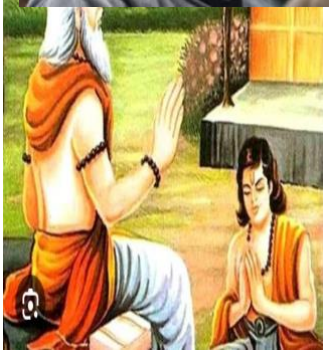

पंचम अध्याय

प्रद्युम्न कुमार सिंह द्वारा रचित शैक्षिक मूल्य परक रचनाएं

5.1 अब छोड़नी होगी

अब छोड़नी होगी'	अन्तर करना
अपनी स्वामिभक्ति	समझनी होगी
फिर से फूँकना होगा	नफ़रत और प्रेम के बीच की खाई
अन्याय और षड़यन्त्र के विरूद्ध	मिटानी होगी
संघर्ष का बिगुल	नफ़रती आग
फिर से परिभाषित करने होंगे	जिसमें झुलसकर तबाह
स्वामिभक्ति के हानि लाभ	हो चुके हैं
हटानी होगी	तुम्हारे और हमारे घर यदि
चमकीले पोस्टरों से	तुम अब भी खामोश रहे
खुद की नज़र	तो समझ लो
और देखनी होगी	ही संततियाँ नकार देंगी
मज़हबी आग में झुलसती	और तुम चाहकर भी
बेतरतीब दुनिया का अक्स	नहीं बचा पाओगे खुद को
सीखना होगा	
हकीकत और फरेब के बीच	

भावार्थ–यह कविता उस समय लिखी गई जब माब लिंचिंग के मामलों में बेतहासा वृद्धि हो रही थी और शक के आधार पर लोग लोगों को पीट पीटकर मारने पर आमादा हो रहे थे। जनता के बीच नफरत व वैमनस्यता का जहर बोया जा रहा था और लोग ऐसे लोगों की बातों में आकर अपने हित अनहित से अधिक अपने को अंधभक्त बनाने का प्रयास कर रहे थे ऐसे लोगों को सचेत करते हुए कहा था-अब वह समय आ गया है जब मनुष्य को अपनी अंधश्रद्धा के बंधन से मुक्त

होना होगा तुम्हे इस बात को समझना होगा कि कैसे तुम्हारी भावनाओं को भड़काकर सत्ता में बैठे लोग सत्ता सुख के लिए तुम्हे आपस में लड़वा रहे कभी धर्म के नाम पर तो कभी जाति के नाम पर और तुम उनके लोक लुभावन प्रलोभनों में फंसकर अपना और अपने देश का अहित कर रहे हो इन सब से छुटकारा पाने के लिए और आदमी बने रहने के लिए आवश्यक है कि तुम्हे अपनी अंध भक्ति छोड़नी होगी और अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष के लिए कमर कसनी होगी। तुम्हे नये तरीके स्वामिभक्ति के तौर तरीकों एवं उनसे होने वाले हानि व लाभ को परिभाषित करना होगा तुम्हे चमकीले पोष्टरों से ढके हुए चेहरों की असलियत को पहिचानना होगा मज़हब व जाति के नाम पर हो रहे भेदभाव से झलसती दनिया के बचाव पर हो रहे भेदभाव से झुलसती दुनिया के बचाव का रास्ता तलाश ना होगा तुम्हे वास्तविकता व बनावटीपन को पहिचानना होगा जो हकीकात से इतर झूठ को सच बनाकर फैलाई जा रही नफ़रत की खाई को प्यार व मोहब्बत के माध्यम से पाटने का प्रयास करना होगा या यूँ कहे कि प्रेम के जल से उस आग की तपिश को कम करना होगा जिसमे झुलस न जाने कितने घर तवाह हो चुके हैं। अब जिसकी जद में तुम्हारा और मेरा भी घर आ चुका है अब खामोश रहने से काम चलने वाला नहीं है इसलिए समय रहते तुम्हे सचेत होना होगा अन्यथा की स्थिति तुम्हारी आगे आने वाली पीढ़ी ही तुम्हारे अस्तित्व को अस्वीकार कर देगी समय बीत जाने पर उन्हे बचाने के तुम्हारे प्रयास भी व्यर्थ हो जायेंगे।

प्रासंगिकता–

जब लोग भावनाओं में बहकर सही गलत को समझे बिना ही निर्णय ले लेते है और उसी के अनुसार कार्य करते है। उनका लक्ष्य ज्यादातर धार्मिक भावनाओं को भड़काकर किसी समुदाय विशेष या समूह के प्रति क्रूरता का व्यवहार करना।

प्रेरक प्रसंग– पराधीनता मे सुख कहाँ ?

एक कुत्ते और बाघ की आपस मे दोस्ती हो गयी| कुत्ता काफी मोटा ताजा था और बाघ दुबला पतला सा था| एक दिन बाघ ने कुत्ते से कहा- भाई एक बात बताओ तुम कैसे इतने मोटे-तगड़े तथा सबल हुए; तुम प्रति दिन क्या खाते हो और कैसे उसकी प्राप्ति करते हो? मैं तो दिन रात भोजन की खोज मे घूम कर भी भरपेट खा नहीं पाता किसी किसी दिन तो मुझे उपवास भी करना पड़ता है| भोजन के कष्ट के कारन ही मैं इतना कमजोर हूँ| कुत्ते ने कहा मैं जो करता हूँ तुम भी अगर वैसा ही कर सको तो तुम्हे भी मेरे जैसा ही भोजन मिल जाएगा| बाघ ने पूछा तुम्हें करना क्या पड़ता है जरा बताओ तो सही| कुत्ते ने कहा कुछ नहीं रात को मालिक के मकान की रखवाली करनी पड़ती है| बाघ बोला बस इतना ही| इतना तो मैं भी कर सकता हूँ| मैं भोजन की तलाश मे बन बन भटकता हुआ धूप तथा वर्षा से बड़ा कष्ट पाता हूँ| अब और यह क्लेश सहा नहीं जाता| यदि धूप और वर्षा के समय घर मे रहने को मिले और भूख के समय भर पेट खाने को मिले तब तो मेरे प्राण बच जायंगे | बाघ की दुःख की बातें सुन कर कुत्तेने कहा ; तो फिर मेरे साथ आओ| मे मालिक से कहकर तुम्हारे लिए सारी

ब्यवस्था करा देता हूँ| बाघ कुत्ते के साथ चल पड़ा| थोड़ी देर चलने के बाद बाघ को कुत्ते की गर्दन पर एक दाग दिखाई पड़ा| यह देख कर बाघ ने कुत्ते से पूछा भाई तुम्हारी गर्दन पर यह कैसा दाग है? कुत्ता बोला अरे वह कुछ भी नहीं है| बाघ ने कहा नहीं भाई मुझे बताओ मुझे जानने की बड़ी इच्छा हो रही है| कुत्ता बोला गर्दन मे कुछ भी नहीं है लगता है कोई पट्टे का दाग लगा होगा| बाघ ने कहा पत्ता क्यों ? कुत्ते ने कहा पट्टे मे जंजीर फसा कर पूरा दिन मुझे बांध कर रखा जाता है| यह सुन कर बाघ विस्मित हो कर कह उठा-जंजीर से बांध कर रखा जाता है? तब तो तुम जब जहाँ जाने की इच्छा हो जा नहीं सकते? कुत्ता बोला ऐसी बात नहीं है , दिन के समय भले ही बंधा रहता हूँ, परन्तु रात के समय जब मुझे छोड़ दिया जाता है तब मैं जहाँ चाहे ख़ुशी से जा सकता हूँ| इस के अतिरिक्त मालिक के नौकर मेरी कितनी देख भाल करते हैं, अच्छा खाना देते हैं| स्नान कराते हैं कभी कभी मालिक भी स्नेह पूर्वक मेरे शरीर पर हाथ फेर दिया करते हैं| जरा सोचो तो मैं कितने सुख मे रहता हूँ| बाघ ने कहा भाई तुम्हारा सुख तुम्हीं को मुबारक हो, मुझे ऐसी सुख की जरुरत नहीं है| अत्यंत पराधीन हो कर राज सुख भोगने की अपेक्षा स्वाधीन रह कर भूख का कष्ट उठाना हजार गुना अच्छा है| मैं अब तुम्हारे साथ नहीं जाउगा यह कह कर बाघ फिर जंगल की तरफ लौट गया|

5.2 वे शब्दों के संवाह

वे शब्दों के संवाहक
वाग्जाल उनकी ताकत
वे अपनाते हैं
मोह माया के तीखे
हथियार
धरम करम की माला
उनकी माथे झलकती फकीरी
राहु-केतु से ढोर डंगर
तकुए से नथुने उनके
जार जार बोली उनकी
वे शब्दों के संवाहक
शब्दजाल उनकी ताकत
भांति भांति के उनके हथकण्डे
ध्वजा थाम लहराते

शिखा संग अलके लहराती
जैसे दीपक संग लहराता
दीप पतंगा
सहज में भी वे अचरज भरते
नूतन की नव आहें भरते
वे शब्दों के सवाहक
वाग्जाल उनकी ताकत
खरे वक्त की उनको पहचान
मनकों में भी सीस भरते
रंग विरंग उनके रक्षक
भाँति भांति की उनकी थाती
परिधान में शक्ल छुपाते
अपनों संग अपनी गाते
वे शब्दों के संवाहक
वाग्जाल उनकी ताकत

भावार्थ– वे शब्दों के संवाहक कविता-यह कविता उस समय लिखी गई जब राजनीति का उद्देश्य स्वच्छ राजनीति के स्थान पर एक दूसरे के ऊपर कीचड़ उछालना मात्र ही रह गया हो या फिर तुच्छता नग्नता लुच्चई करना ही रह गई हो। एक के द्वारा दूसरे के प्रति आया हुआ कोई भी मौका नहीं गवाना हो गया हो। यहाँ तक कि प्यादे तो प्यादे ऊँचे ओहदों पर बैठे लोग भी गैर जिम्मेदाराना व्यवहार करने से न कतराते हों। राजनेताओं का नित नये नये शब्दों के द्वारा लोगों की भावनाओं को दिग्भ्रमित करना या फिर उनका रुख मोड़ना ही एकमात्र कार्य रह गया हो। कुछ का कुछ अर्थ निकाला जाने लगा हो ऐसे में जब उनके बोलने का लहजा ही उनकी ताकत होती है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए धर्म एवं विश्वास के नाम पर नफ़रत वैमनस्यता की गहरी खाई निर्मित की जा रही हो और बेवजह के मुद्दों को तूल दिया जाना उनकी फितरत बनती जा रही हो। ढोंग ढकोसलों ही उनकी अपनी इच्छा पूर्ति ही उद्देश्य बन जाये। वाह्य आडम्बर का दिखावा करना तथा जाहिलपन को कसीदों के साथ उचित ठहराना ही मकसद हो जाता है ऐसे वे शब्दों के बाण बन अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन करते हैं और अपनी बात को सही ठहराने के लिए चाहे जो भी करना पड़ जाये उसे करने का हरसम्भव प्रयास करते हैं इसके लिए चाहे शिखाओं को लम्बे बालों के साथ मिलाकर अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन करना हो या फिर स्वार्थ पूर्ति की ध्वजा को लेकर हुंकार भरना हो सब कुछ को वे जायज मानते हैं ठीक उसी प्रकार जैसे पतंगा दीपक की लौ के साथ हिलता डुलता है पर उसको छोड़कर नहीं जाता है भले ही दीपक की लौ में जलकर स्वयं को नष्ट कर ले। आज का राजनीतिक परिदृश्य भी उसी प्रकार हो चुका है जिसमे परमार्थ की मात्रा लगभग नगण्य है। सामान्य तौर पर तो वे ऐसा बर्ताव करते हैं मानों वे तुम्हारे हितों के लिए अपना सर्वस्य बलिदान कर देंगे पर उनकी हकीकत इसके बिल्कुल उलट होती है। वे शब्दों के तीर है और ये शब्द ही उनकी शक्ति होते हैं उन्हे समय की सही पहिचान होती है और समय के साथ स्वयं को परिवर्तित करने में भी संकोच नहीं करते है। अपने स्वार्थ के निमित्त वे सोने के मनकों में सीस भरकर उनके खोटेपन को भी छुपाने का प्रयास करते हैं इसके लिए वे किसी भी जोखिम को उठाने से नहीं कतराते हैं।इस कार्य के लिए वे बाकायदा अपने कुछ चारण पाल रखे होते है जो उनके गलत कार्यों को भी सही बताने का उपक्रम करते रहते हैं। स्वयं तो सुस्वादु भोजन ग्रहण करते हैं अच्छे अच्छे वस्त्र धारण करते है किन्तु आपको इन्द्रिय निग्रह की सलाह देने से नहीं चूकते हैं। उनकी मौका परस्ती इतनी अधिक होती है कि मौका मिलते ही अपनों के बीच भी अपना ही गुणगान करते है। वे शब्दों के तीखे तीर हैं शब्दों का तीखापन ही उनकी शक्ति है।

प्रासंगिकता:

प्रेरक प्रसंग: राहु-केतु का डर दिखाए वो ढोंगी, जात- पात से ऊपर जिसने जग को साध लिया, वही साधु

राहु-केतु और शनि का डर दिखाने वाले लोग साधु नहीं ढोंगी होते हैं। साधु वह है जो जात-पात से ऊपर है और जिसने जग को साध लिया है। जो अंदर है, वही बाहर रखे। वही साधु है। संत का काम भय दिखाना नहीं, भयमुक्त करना है। जो समय है, वही श्रेष्ठ है। जो सामने है, वही श्रेष्ठ है। साधु-संतों को आप नहीं बता सकते कि वो क्या खाएंगे, पिएंगे या पहनेंगे। यह विचार पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में चल रहे प्राकट्य महोत्सव में रितेश्वर महाराज ने रखे। उन्होंने

आगे कहा कि प्रेम की भूख प्रेम से ही मिट सकती है। धन से नहीं। न तुम समय को सुधारो। न समाज को सुधारो। सुधारना है तो खुद को सुधारो। सृष्टि नहीं, दृष्टि बदलो। ये वही भारतवर्ष है जहां राम-कृष्ण और संत-महात्माओं को नहीं बख्शा गया। ख्राइस्ट के साथ क्या हुआ। उनको पत्थर मारने के लिए पूरी भीड़ इकट्ठा हो गई। जब उन्होंने पत्थर उठाकर कहा कि आपमें से जिसने जीवन में कोई पाप न किया हो, बेशक मुझे मार सकते हैं। हुआ क्या। सारी भीड़ वापस चली गई। बाद में उन्हें भी सूली पर चढ़ा दिया। वर्जनाओं के कारण किसी महत पुरुष की उपेक्षा न करें। किसी की व्यक्तिगत कर्म की उपेक्षा क्यों, यदि कोई डॉक्टर शराबी है। कबाबी है। कामी है। इसके बाद भी उसके द्वारा किए जा रहे सारे ऑपरेशन सफल हैं। वहीं एक डॉक्टर बहुत धार्मिक है, लेकिन उसके एक भी ऑपरेशन सफल नहीं है। अब तुम अपनी जान बचाने के लिए किसके पास जाओगे। जो तुम्हारी जान बचा ले, तुम उसी के पास जाओगे। कामना और तृष्णा का त्याग करो। दूसरों के गुण-दोष मत देखो। यदि दोष देखोगे तो द्वेष होगा। गुण देखोगे तो आसक्ति होगी। हमारी आसक्ति तो केवल और केवल श्री राधा-कृष्ण में होनी चाहिए। इस दौरान बिंदेश्वरी बघेल, मंत्री ताम्रध्वज साहू, राकेश अग्रवाल, रामप्रताप सिंह, ननकीराम कंवर, चिंतामणि महाराज, नारायण प्रसाद चंदेल, अनिता शर्मा, लाभचंद बाफना, प्रतिमा चंद्राकर, प्रकाश नायक, अनिल पास, देवेंद्र पांडेय, त्रिलोक चंद बागड़िया आदि मौजूद रहे।

कथा के पांचवे दिन प्रदेशभर से श्रद्धालु रितेश्वर महाराज को सुनने राजधानी के पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम पहुंचे।

5.3 कमाल के लोग है

कमाल के लोग हैं **कोई चश्मा लेकर** **कोई लाठी की** **कोई विरासत की चाबी लेकर** **अनुयायी बनने का** **रचता है स्वांग** **स्वच्छता की अलख** **जगाता** **सत्य अहिंसा का महामन्त्र ले** **नतमस्तक विश्व धरा** **साध रहे सभी साध्यों संग**	**नवरूप** **यद्यपि गांधी, थाती नहीं** **किसी की** **ना ही है जागीर** **फिर भी जागीरदार और** **ठेकेदार बनने की होड़ में** **ठग रहे हैं** **खुद ही खुद को लोग**

भावार्थ –

यह कविता उस समय की है जब गाँधी जी विरासतें मसलन चरखा चश्मा घडी व लाठी को लेकर राजनैतिक क्षेत्र में बहस छिड़ चुकी थी हर राजनीतिक दल महापुरुषों की विरासतों के सहारे अपनी राजनीति की नैया खेना चाह रहा था ऐसे में इस कविता के भाव मन में जागरित हुए-आज के समय में राजनीति के क्षेत्र में राजनैतिक पार्टियों के पास वोट की राजनीति इस कदर हावी हो चुकी है कि कोई गाँधी जी के चश्मे को लेकर तो कोई उनकी लाठी की विरासत लेकर अपनी राजनैतिक रोटियाँ सेकने का प्रयास करता है या फिर स्वयं को इन विरासतों का असल वारिस दिखाने का प्रयास करता है कोई उनके इन चिन्हों में स्वच्छता का तमगा टांग उसका श्रेय लेना चाहता है कोई यह बताने में ही अपनी पीठ थपथपाकर अपने को धन्य मानता है कि उनके द्वारा बताये गये सत्य अहिंसा के महामन्त्र के समक्ष पूरी दुनिया नतमस्तक है। सभी अपने अपने तरीके अपने साध्यों को साधने का प्रयास करते हैं। यद्यपि यह बात भी सत्य है कि गाँधी किसी एक की जागीर नहीं है अपितु वे सब के है बावजूद इसके अवसरवाद के इस विषम समय में प्रत्येक पार्टी अपने आपको उनकी विरासतो का जागीरदार और ठेकेदार दिखाने की होड में शामिल हो चुका है इस तरह वे किसी और को नहीं अपितु स्वयं को ही ठगने था कार्य कर रहें हैं। क्योंकि महापुरुष सम्पूर्ण मानव समाज की धरोहर होते है न कि किसी एक व्यक्ति किसी एक पार्टी के।

प्रासंगिकता:

प्रेरक प्रसंग: मृत्यु अटल है| (बनावटीपन से संबंधित)

एक चतुर व्यक्ति को काल से बहुत डर लगता था, और वह सोचता था कि मेरी किसी भी क्षण मृत्यु हो सकती है।वह क्या करे?

एक दिन उसे चतुराई सूझी और काल को ही अपना मित्र बना लिया। उसने अपने मित्र काल से कहा- मित्र, तुम किसी को भी नहीं छोड़ते हो, किसी दिन मुझे भी गाल में धर लोगो!

काल ने कहा- ये मृत्यु लोक है. जो आया है उसे मरना ही है; सृष्टि का यह शाश्वत नियम है, इसलिए मैं मजबूर हूं, पर तुम मित्र हो इसलिए मैं जितनी रियायत कर सकता हूं करूंगा ही मुझसे क्या आशा रखते हो, साफ-साफ कहो।

व्यक्ति ने कहा- मित्र मैं इतना ही चाहता हूं कि आप मुझे अपने लोक ले जाने के लिए आने से कुछ दिन पहले एक पत्र अवश्य लिख देना ताकि मैं अपने बाल-बच्चों को कारोबार की सभी बातें अच्छी तरह से समझा दूं और स्वयं भी भगवान भजन में लग जाऊं।

काल ने प्रेम से कहा- यह कौन सी बड़ी बात है, मैं एक नहीं आपको चार पत्र भेज दूंगा, चिंता मत करो चारों पत्रों के बीच समय भी अच्छा खासा दूंगा ताकि तुम सचेत होकर काम निपटा लो।

वह व्यक्ति बड़ा ही प्रसन्न हुआ। सोचने लगा कि आज से मेरे मन से काल का भय भी निकल गया, मैं जाने से पूर्व अपने सभी कार्य पूर्ण करके जाऊंगा तो देवता भी मेरा स्वागत करेंगे।

दिन बीतते गये आखिर मृत्यु की घड़ी आ पहुंची *काल* अपने दूतों सहित उसके समीप आकर बोला- "मित्र अब समय पूरा हुआ मेरे साथ चलिए मैं सत्यता और दृढ़तापूर्वक अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करते हुए एक क्षण भी तुम्हें और यहां नहीं छोड़ूंगा।"

उस व्यक्ति के माथे पर बल पड़ गए, भृकुटी तन गयी और कहने लगा- "धिक्कार है तुम्हारे जैसे मित्रों पर! मेरे साथ विश्वासघात करते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आती"?

"तुमने मुझे वचन दिया था कि आने से पहले पत्र लिखूंगा। परंतु तुम तो बिना किसी सूचना के अचानक दूतों सहित मेरे ऊपर चढ़ आए. मित्रता तो दूर रही तुमने अपने वचनों को भी नहीं निभाया।

काल हंसा और बोला- "मित्र इतना झूठ तो न बोलो। मैंने आपको एक नहीं चार पत्र भेजे आपने एक भी उत्तर नहीं दिया।

उस व्यक्ति ने चौंककर पूछा– "कौन से पत्र? कोई प्रमाण है? मुझे पत्र प्राप्त होने की कोई डाक रसीद आपके पास है तो दिखाओ।"

काल ने कहा– मित्र, घबराओ नहीं, मेरे चारों पत्र इस समय आपके पास मौजूद हैं।

मेरा पहला पत्र आपके सिर पर चढ़कर बोला, आपके काले सुन्दर बाल, उन्हें सफ़ेद कर दिया और यह भी कहा कि सावधान हो जाओ, जो करना है कर डालो।

बनावटी रंग लगा कर आपने अपने बालों को फिर से काला कर लिया और पुनः जवान बनने के सपनों में खो गए आज तक मेरे श्वेत अक्षर आपके सिर पर लिखे हुए हैं।

कुछ दिन बाद मैंने दूसरा पत्र आपके नेत्रों के प्रति भेजा. नेत्रों की ज्योति मंद होने लगी। फिर भी आंखों पर मोटे शीशे चढ़ा कर आप जगत को देखने का प्रयत्न करने लगे, दो मिनट भी संसार की ओर से आंखे बंद करके, ज्योतिस्वरूप प्रभु का ध्यान मन में नहीं किया।

इतने पर भी सावधान नहीं हुए तो मुझे आपकी दीनदशा पर बहुत तरस आया और मित्रता के नाते मैंने तीसरा पत्र भी भेजा। इस पत्र ने आपके दांतो को छुआ, हिलाया और तोड़ दिया। आपने इस पत्र का भी जवाब न दिया बल्कि नकली दांत लगवाये और जबरदस्ती संसार के भौतिक पदार्थों का स्वाद लेने लगे।

मुझे बहुत दुःख हुआ कि मैं सदा इसके भले की सोचता हूँ और यह हर बार एक नया, बनावटी रास्ता अपनाने को तैयार रहता है।

अपने अन्तिम पत्र के रूप में मैंने रोग- क्लेश तथा पीड़ाओं को भेजा परन्तु आपने अहंकार वश सब अनसुना कर दिया।

वह व्यक्ति काल के भेजे हुए इन पत्रों को सुन कर फूट-फूट कर रोने लगा और अपने विपरीत कर्मों पर पश्चाताप करने लगा। उसने स्वीकार किया कि मैंने गफलत में शुभ चेतावनी भरे इन पत्रों को नहीं पढ़ा।

मैं सदा यही सोचता रहा कि कल से भगवान का भजन करूंगा, अपनी कमाई अच्छे शुभ कार्यो में लगाऊंगा, पर वह कल ही नहीं आया।

काल ने कहा– "आज तक तुमने जो कुछ भी किया, राग-रंग, स्वार्थ और भोगों के लिए जान-बूझकर ईश्वरीय नियमों को तोड़कर तुमने कर्म किये"।

उस व्यक्ति को जब कोई मार्ग दिखाई नहीं दिया तो उसने काल को करोड़ों की सम्पत्ति का लोभ दिखाया। काल ने हंसकर कहा- "मित्र यह मेरे लिए धूल से अधिक कुछ भी नहीं है। धन-दौलत, शोहरत, सत्ता ये सब लोभ संसारी लोगों को वश में कर सकता है मुझे नहीं"।

काल ने उत्तर दिया- यदि तुम मुझे लुभाना ही चाहते थे तो सच्चाई और शुभ कर्मों का धन संग्रह करते यह ऐसा धन है जिसके आगे मैं विवश हो सकता था, अपने निर्णय पर पुनर्विचार को बाध्य हो सकता था पर तुम्हारे पास तो यह धन धेले भर का भी नहीं है।

तुम्हारे ये सारे रूपए-पैसे, जमीन-जायदाद, तिजोरी में जमा धन-संपत्ति सब यहीं छूट जाएगा, मेरे साथ तुम भी उसी प्रकार निर्वस्त्र जाओगे जैसे कोई भिखारी की आत्मा जाती है।

काल ने जब मनुष्य की एक भी बात नहीं सुनी तो वह हाय-हाय करके रोने लगा।

सभी सम्बन्धियों को पुकारा परन्तु काल ने उसके प्राण पकड़ लिए और चल पड़ा अपने गन्तव्य की ओर।

5.4 एक हारा हुआ व्यक्ति

एक हारा हुआ व्यक्ति **जीत के स्वप्न** **देख सकता है।** **उन्हें पूरे करने का** **प्लान बना सकता है।** **लोगों को भरोसा दिलाने का** **पूर्ण प्रयास कर सकता है।** **अपनी इच्छाएँ आकांक्षाएँ** **गुप्त रख सकता है।** **अपनी कमजोरियाँ** **छिपाने के सारे प्रयास** **कर सकता है**	**लेकिन वह सुकून से** **बैठ नहीं सकता है** **क्योंकि हार का दंश उसे** **बैठने नहीं देता** **और पूर्व की खुशी** **उसे जीने नहीं देती**

भावार्थ—यह कविता एक हारा हुआ व्यक्ति के मन की भावनाओं को व्यक्त करती है, जो सपनों में जीत को प्राप्त करने की इच्छा रखता है। वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक योजना बना सकता है और लोगों को भरोसा दिलाने के लिए पूरी कोशिश कर सकता है। वह अपनी इच्छाएं और आकांक्षाएं गुप्त रख सकता है और अपनी कमजोरियों को छिपाने का प्रयास कर सकता है। हालांकि, वह सुकून से बैठ नहीं सकता है, क्योंकि पीछे गुजरे हुए समय के खुशी उसे आने वाले वक्त में जीने नहीं देती। इसका भावार्थ है कि हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए विराम नहीं लेना चाहिए और आने वाले समय में खुशियों को खोजने की कल्पना करनी चाहिए।

प्रासंगिकता—प्रेरक प्रसंग—लक्ष्य

एक लड़के ने एक बार एक बहुत ही धनवान व्यक्ति को देखकर धनवान बनने का निश्चय किया। वह धन कमाने के लिए कई दिनों तक मेहनत कर धन कमाने के पीछे पड़ा रहा और बहुत सारा पैसा कमा लिया। इसी बीच उसकी मुलाकात एक विद्वान से हो गई। विद्वान के ऐश्वर्य को देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया और अब उसने विद्वान बंनने का निश्चय कर लिया और अगले ही दिन से धन कमाने को छोड़कर पढने-लिखने में लग गया। वह अभी अक्षर ज्ञान ही सिख पाया था, की इसी बीच उसकी मुलाकात एक संगीतज्ञ से हो गई। उसको संगीत में अधिक आकर्षण दिखाई दिया, इसीलिए उसी दिन से उसने पढाई बंद कर दी और संगीत सिखने में लग गया। इसी तरह काफी उम्र बित गई, न वह धनी हो सका ना विद्वान और ना ही एक अच्छा संगीतज्ञ बन पाया। तब उसे बड़ा दुख हुआ। एक दिन उसकी मुलाकात एक बहुत बड़े महात्मा से हुई। उसने महात्मन को अपने दुःख

का कारण बताया। महात्मा ने उसकी परेशानी सुनी और मुस्कुराकर बोले, "बेटा, दुनिया बड़ी ही चिकनी है, जहाँ भी जाओगे कोई ना कोई आकर्षण ज़रूर दिखाई देगा। एक निश्चय कर लो और फिर जीते जी उसी पर अमल करते रहो तो तुम्हें सफलता की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी, नहीं तो दुनियां के झमेलों में यूँ ही चक्कर खाते रहोगे। बार-बार रूचि बदलते रहने से कोई भी उन्नत्ति नहीं कर पाओगे।" युवक महात्मा की बात को समझ गया और एक लक्ष्य निश्चित कर उसी का अभ्यास करने लगा।

5.5आओ मुझे माँजो

आओं मुझे माँजो जैसे एक किसान मांजता है अपने खेतों को औरतें मांजती हैं। अपने घर को संत मांजता है अपनी बुद्धि को बूढ़े मांजते हैं समय को ओ दुःख ! उसी तरह तुम भी मुझे माँजो आओ मुझे माँजो जैसे लोहार माँजता है लोहे को सुनार माँजता है सोने को वास्तुकार माँजता है। अपने वास्तु ज्ञान को	गुरु माँजता है अपने शिष्य को चित्रकार माँजता है। अपने चित्रों को गीतकार माँजता है। अपने स्वरों को और साहित्यकार माँजता है। अपने साहित्य को ओ दुःख ! उसी तरह तुम भी मुझे माँजो क्योंकि मुझे पता है वस्तुएं मांजने से ही चमकती हैं और न मांजने से स्याह। और न मांजने से स्याह।

भावार्थ— यह कविता व्यक्तियों और विभिन्न कलाओं के माध्यम से अपनी क्षमताओं को सुधारने और नवीनता लाने के महत्व को बयां करती है। किसान, औरतें, संत, बूढ़े, लोहार, सुनार, वास्तुकार, गीतकार, साहित्यकार आदि अपने क्षेत्र में अपनी कला और ज्ञान को समर्पित करते हैं और समय का सम्मान करते हैं। इस कविता के भावार्थ में यह संदेश है कि हम सभी को अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए और नई सृजनात्मकता और प्रगति की दिशा में प्रयास करना चाहिए।

प्रासंगिकता—

शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग- जान लगा दो या जाने दो

मोहित एक Runner था, इसका सपना ओलंपिक में जाना था। वह हर मैराथन में हिस्सा लेता था। लेकिन आज तक कोई भी मैराथन पूरा नहीं कर पाया और इस बात पर उसे बहुत अफसोस था। वह खुद में ही खुद से हारने लगा था, पर उसने अभी तक हार नहीं मानी थी, वह कोशिश पे कोशिश किए जा रहा था। हर साल मोहित मैराथन में हिस्सा लेता था

पर उसे पूरा नहीं कर पाता था। वह मैदान मे जाते ही अपने {competitor} प्रतियोगी को देख hopeless हो जाता। उनके सामने खुद से खुद की कमी निकालता, खुद मे वो भरोसा नहीं रख पाता।

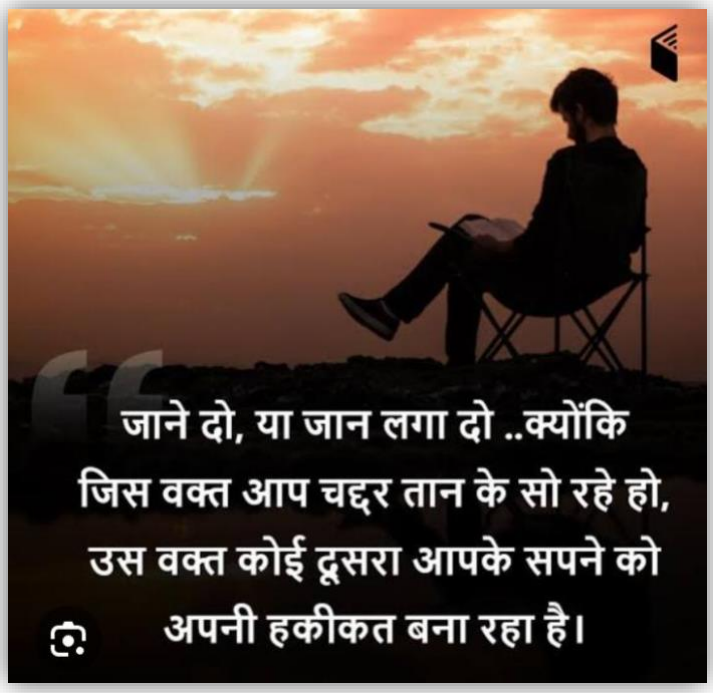

लेकिन हर साल की भांति इस साल मैराथन होने में सिर्फ 2 महीने ही बचे थे। मोहित ने रोज कसरत और दौड़ लगाना शुरू कर दिया और उसने खुद से वादा किया कि इस बार मैं मैराथन जरूर पूरा करूंगा। इस फैसले के बाद उसने कड़ी मेहनत भी चालू कर दी और रोज कुछ ज्यादा कुछ ज्यादा वह अपनी क्षमता को बढ़ाने लगा। महीनो की मेहनत थीं और वो दिन आ गया जिसका मोहित को बेसब्री से इंतजार था। हां दोस्तों आप सही सोच रहे हैं मैराथन। मोहित मैदान पहुंचा और हर बार की भांति इस बार भी hopeless होने लगा मगर अंदर से आवाज आई मैं कर सकता हूं। आसान है।

बाकी सब runners के साथ मोहित ने भी दौड़ना शुरू किया , लेकिन कुछ दूर तक दौड़ लगाने के बाद उसके पैरों में दर्द होने लगा और उसे लगा इस बार भी नहीं हो पाएगा, लेकिन खुद को उसने काबू किया और बोला मोहित अगर दौड़ नहीं पा रहे हो तो jogging (धीरे-धीरे चलना) ही कर लो। लेकिन आगे बढ़ो, मोहित में jogging करना शुरू किया मतलब पहले के मुकाबले जरा धीमा हो गया। कुछ आगे बढ़ने के बाद उसके पैरों की नसें भी खींचने लगा। मोहित को अब मैराथन पूरा करना नामुमकिन – सा लगने लगा। मगर अंदर से आवाज आई jogging नहीं कर पा रहे हो तो चलते हुए race पूरा करो। चलते रहो रुको मत मैराथन जरूर पूरा करना है और फिर वह चलने लगा।

उसकी काफी धीमी गति हो गई थी। सारे runners उससे एक – एक करते आगे निकलते जा रहे थे और मोहित उन्हें आगे निकलते हुए देखने के अलावा कुछ भी नहीं कर पा रहा था। तभी अचानक लड़खड़ा कर वो जमीन पर गिर पड़ा | जमीन पर पड़े – पड़े उसके दिमाग में ख्याल आने लगा कि इस बार भी मैं मैराथन पूरा नहीं कर पाया। तभी मोहित के अंदर से आवाज आई, जिसने कहा उठो मोहित चल नहीं पा रहे हो तो लड़खड़ाते हुए Finish Line को पार कर लो। Finish Line अब बहुत सामने है। मोहित लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा और Finish Line को किसी तरह पार कर लिया। और जो खुशी जो (Satisfaction) संतुस्टी उसने महसूस की वो इससे पहले उसने
कभी नहीं की थी।

5.6 यह हकीकत है

यह हकीकत है
मेहनतकस उन
बंजारों की
जो उठाये रहते हैं।
शिशिर की
हाड़ कंपाती सर्दी में
या फिर ग्रीष्म की
तपती धूप में
अपने हुनर का हथौड़ा
और अकड़े हुए
लोहे को भी
दे देते हैं सहज ही

दे देते हैं सहज ही
सुडौल आकार
माथे पर चुहचुहाई हुई
पसीने की बूंदें
भूख और प्यास की चिन्ता से
उन्मुक्त ये
आखिरी दम तक
करते हैं
श्रम पर भरोसा
य द्यपि नहीं होता है
कोई इनका ठौर ठिकाना

भावार्थ—यह कविता बंजारों की मेहनत, संघर्ष और संघर्षों के बावजूद उनकी मेहनती मेहनत की महत्वपूर्णता को दर्शाती है, जो समुद्रगुप्त की प्रसिद्ध कविता "जिन्दगी की राह में मजदूरों की जिंदगी" से प्रेरित है। इसमें बंजारों की महत्वपूर्ण भूमिका और उनके त्यागपूर्ण जीवनशैली का वर्णन किया गया है, जो समाज में अपने महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद अक्सर अनदेखे रहते हैं।

इस चौपाई में लेखक ने बंजारों की मेहनत और संघर्ष की महत्वपूर्ण अद्भुतता को व्यक्त किया है, जो उन्हें हर मौसम के बावजूद उनके काम में प्रेरित करती है। वे श्रमिक अपने कौशल का परिचय देते हैं और उनकी मेहनत और साहस को प्रशंसा की जाती है, जो उन्हें अपने लक्ष्यों तक पहुँचने में मदद करते हैं। उनकी अद्भुत परिश्रम और आत्मविश्वास ने उन्हें हर कठिनाई को पार करने की शक्ति प्रदान की है, चाहे वो सर्दी की ठंढी हो या गर्मी की ज़बरदस्त धूप। इसके साथ ही, यह काव्य बताता है कि उन्होंने अपने श्रम पर आत्मविश्वास का भरोसा किया है, हालांकि दुनिया शायद उनकी महत्वपूर्णता को समझने में अक्षम हो सकती है।

प्रासंगिकता—

प्रेरक प्रसंग-आइसक्रीम की एक डिश A Ice Cream Dish

एक बार एक छोटा सा लड़का एक होटल में गया। कुछ ही देर में वहां वेटर आया और उसने पुछा आपको क्या चाहिए सर? छोटे बच्चे ने उल्टा पुछा! वैनिला आइसक्रीम (vanilla ice-cream) कितने रूपए का है ? उस वेटर वाले ने जवाब दिया 50 रुपये का।

यह सुन कर उस छोटे लड़के ने अपने जेब में हाँथ डाल कर कुछ निकला और हिसाब किया। उसने दुबारा पुछा कि संतरा फ्लेवर आइसक्रीम (orange flavor ice-cream) कितने का है। वेटर ने दुबारा जवाब दिया और कहा 35 रुपये का सर। यह सुने के बाद उस लड़के ने कहा! मेरे लिए एक संतरा फ्लेवर आइसक्रीम (orange flavor ice-cream) ले आईये। कुछ ही देर में वेटर आइसक्रीम की प्लेट और साथ में बिल लेकर आया और उस बच्चे के टेबल पर रखकर चले गया। उस लड़के ने उस आइसक्रीम को खाने के बाद पैसे दिए और वह चले गया।

जब वह वेटर वापस आया तो वह दंग रहे गया यह देखकर कि उस लड़के नें खाए हुए आइसक्रीम प्लेट के बगल में आइस-क्रीम के 35 रुपए के साथ उसके लिए 15 रुपए का टिप छोड़ गया था।

5.7 पोंछ डालो

पोंछ डालो उन
आंसुओं को
जो शैलाब बन कर
आते हैं
स्मृतियों के झरोखों से
अनायास ही
हो जाते हैं उपस्थित
पोछ डालो उन
जो बेताब दिखते हैं
तोड़ने को
समृद्ध बन चुके एहसासों को
और छीन लेना चाहते हैं
सुख के चन्द कतरे
पोंछ डालो उन
आंसुओं को
जो वक्त की हकीकतों को
गुमराह करते हैं
और विवश करते हैं
वर्तमान को छोड़कर भूत में
जीने के लिए

भावार्थ— यह कविता आंसुओं के माध्यम से समय की हकीकतों को छिपाने और व्यक्ति को उन्हें भूत जीने के लिए प्रेरित करने की बात करती है। आंसुओं के द्वारा व्यक्त होने वाले अहसास और भावनाएं वक्त के साथ गुम हो जाती हैं, लेकिन उन्हें पोछने का प्रयास किया गया है ताकि व्यक्ति उन्हें समय-समय पर फिर से महसूस कर सके और वर्तमान के साथ भूत को साथ जी सके। इस कविता में व्यक्त होने वाली आंसुओं की भावनाओं की गहराई और उनके महत्व को उत्कृष्ट ढंग से प्रकट किया गया है।

प्रासंगिकता—

प्रेरक प्रसंग— भविष्य में क्या होगा, ये सोचकर वर्तमान को खराब नहीं करना चाहिए

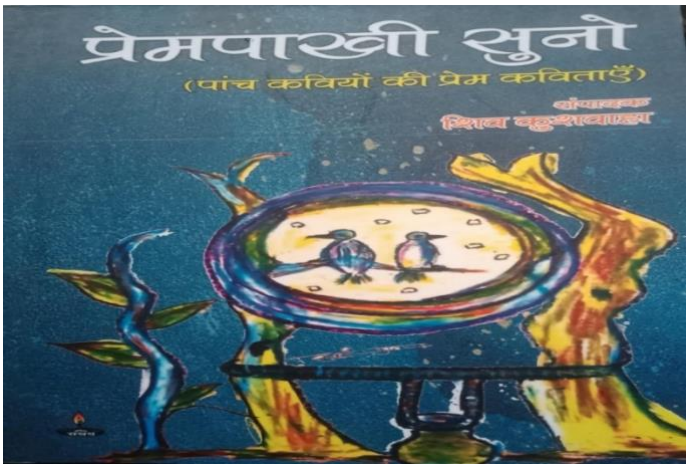

जीवन मंत्र डेस्क। प्रचलित लोक कथा के अनुसार पुराने समय एक सेठ ने अपनी पूरी संपत्ति का पूरा मूल्यांकन किया तो उसे मालूम हुआ कि उसके पास इतना धन है, जिससे उसकी सात पीढ़ियों के पास सभी सुख-सुविधाएं रहेंगी। व्यापारी ने सोचा कि मेरी सिर्फ सात पीढ़ियां ही सुखी रहेंगी, आठवीं पीढ़ी दुखी रहेगी? उन्हें सुख कैसे मिलेगा? ये बातें सोचकर वह परेशान हो गया। करती है। मेरे पास तो अपार धन-संपत्ति है, फिर भी मैं बिना वजह चिंतित हो रहा हूं। मेरी ये चिंता व्यर्थ है। सेठ ने भविष्य की चिंता करना छोड़ दिया और वह सुख-शांति से रहने लगा। तब वह क्षेत्र के प्रसिद्ध संत के पास पहुंचा।

सेठ ने संत से कहा कि महाराज कृपया मेरी चिंता दूर करें। मेरे पास सिर्फ सात पीढ़ियों के लिए ही धन है। मेरी आठवीं पीढ़ी भी सुखी जीवन जी सके, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए, कृपया कोई उपाय बताएं।

संत ने सेठ की बात ध्यान से सुनी और कहा कि गांव में एक वृद्ध महिला है, उसके घर में कमाने वाला कोई नहीं है। बड़ी मुश्किल से उसे रोज का खाना मिल पाता है। तुम एक काम करो, उस महिला को थोड़ा सा आटा दे दो। इस छोटे से दान से तुम्हारी चिंता दूर हो जाएगी।

सेठ तुरंत ही अपने घर गया और वहां से उसने एक बोरी आटा लिया और महिला के घर पहुंचा। उसने वृद्ध महिला से कहा कि मैं आपके लिए एक बोरी आटा लाया हूं। कृपया इसे ग्रहण करें। महिला बोली कि मेरे पास आज के लिए पर्याप्त आटा है, इसीलिए मुझे ये नहीं चाहिए।

सेठ ने कहा कि इसे स्वीकार करें, इससे आपको कई दिनों तक खाने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। महिला बोली कि मैं इसे रखकर क्या करूंगी, मेरे लिए आज के खाने की व्यवस्था हो गई है। तब सेठ ने कहा कि ठीक है ज्यादा मत रखो, थोड़ा ही ले लो कल काम आ जाएगा। महिला बोली कि मैं कल की चिंता नहीं करती, जैसे आज खाना मिला है, कल भी मिल जाएगा। भगवान की कृपा से मेरा का भरण-पोषण रोज हो जाता है।

ये बातें सुनकर सेठ समझ गया कि महिला के पास कल के लिए भोजन की व्यवस्था नहीं है, लेकिन ये कल की चिंता नहीं करती है। मेरे पास तो अपार धन-संपत्ति है, फिर भी मैं बिना वजह चिंतित हो रहा हूं। मेरी ये चिंता व्यर्थ है। सेठ ने भविष्य की चिंता करना छोड़ दिया और वह सुख-शांति से रहने लगा।

षष्ठ अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध में फतेहपुर के कवि प्रदुम्न कुमार सिंह जी की रचनाओं का अध्ययन किया गया, जिसके निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

6.1.1 कविता सम्बन्धी

6.1.1.1 अब छोड़नी होगी

- प्रद्युम्न जी द्वारा व्यक्त किए गए भावनात्मक विचार, स्वामिभक्ति, अन्याय, षडयन्त्र, और मज़हबी तनाव के प्रति उसकी चिंता को प्रकट करते हैं।
- कविताओं के माध्यम से, कवि द्वारा अन्याय और षड्यन्त्र के खिलाफ संघर्ष की आवश्यकता को जताया गया है, और सवाल उठाया गया है कि कैसे हमें अपनी स्वामिभक्ति के हानि लाभ को छोड़कर सामाजिक और मानविक मूल्यों के प्रति जिम्मेदारी बढ़ानी होती है।
- यह कविता जीवन की हकीकत और फरेब के बीच की वास्तविकता को समझने की ओर हमारी ध्यान दिलाती है और हमें नफरत और प्रेम के बीच की खाई को मिटाने को प्रोत्साहित करती है।

6.1.1.2 वे शब्दों के संवाहक

- शब्दों की शक्ति ने मानव मानसिकता को परिवर्तित किया है और उन्हें नवीनतम आविष्कारों और विचारों की ओर प्रेरित किया है
- भ्रष्टाचार, दिखावट, और असली मूल्यों के महत्व को सुनिश्चित करने की आवश्यकता को प्रकट करती है।
- श्रम में आत्मविश्वास होने के बावजूद, बंजारे लोग अपने सहज और मजबूत आकार के साथ तपती धूप के बावजूद मेहनत करते हैं, भूख और प्यास की चिंता से उन्मुक्त होते हैं।
- कविता इस द्विविधिता को दर्शाती है और समाज को विचार करने और बेहतर दिशा में बदलने की आवश्यकता को उजागर करती है।

6.1.1.3 एक हारा हुआ व्यक्ति

- व्यक्ति पुनः संघर्ष और प्रयास करे, तो हारा हुआ व्यक्ति भी जीत के सपने देख सकता है और उन्हें पूरा करने के लिए प्रयास कर सकता है।

- इसके बवजूद, वे अपने श्रम के प्रति विश्वास रखते हैं, जो उनके लिए आखिरी सहारा होता है।
- इसके माध्यम से कवि ने मेहनत के महत्व और उन लोगों के योगदान को स्वरूप दिया है जो अक्सर समाज में अदृश्य होते हैं।
- यह कविता मानवता के अनगिनत रूपों की महत्ता को उजागर करती है, जो मेहनती और संघर्षरत लोगों के अनमोल योगदान को दर्शाती है।
- वे भूख और प्यास के बावजूद भी श्रम में विश्वास रखते हैं और अपने काम में पूरी मेहनत और समर्पण दिखाते हैं।
- कविता में इनके साहस और उनकी मानसिकता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो उन्हें आगे बढ़ने और समर्थन करने में मदद करती है।
- यह कविता व्यक्ति को विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराओं से जुड़ाता है, जो हर व्यक्ति के अपने क्षेत्र में समर्पण को मानता है।

6.1.1.4 आओ मुझे माँजो

- किसान अपने खेतों की देखभाल करता है, गुरु अपने शिष्य को मार्गदर्शन देता है, माता अपनी बुद्धि का सही उपयोग करती है, गीतकार अपने गीतों की मूल्यांकन करता है और साहित्यकार अपने साहित्य को मानता है, वैसे ही हर व्यक्ति को अपने जीवन में अपने काम और कला का सम्मान देना चाहिए।
- यह कविता हमें याद दिलाती है कि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत और समर्पण की आवश्यकता है, चाहे वो किसान की खेती हो, वास्तुकार की कला हो, या साहित्यकार की रचना हो।

6.1.1.5 यह हकीकत है

- इस कविता में बताया गया है कि मेहनतकश लोग, जो अपने हुनर और कठिनाइयों का सामना करते हैं, वास्तव में समर्पित और प्रेरणा स्त्रोत होते हैं।
- इस कविता में बताया गया है कि हमें अपने जीवन में गुजरे हुए दुःख पूर्ण पलों को छोड़ना और सकारात्मक दिशा में बदलने की जरूरत है।

6.1.1.6 पोंछ डालो

- इस कविता का संदेश है कि हमें उन लोगों को तोड़ने की कोशिश करने के बजाय, जो अपनी श्रमिकता और आत्मविश्वास से समृद्ध हो गए हैं, समर्थन और सम्मान देना चाहिए. हमें उनके जीवन की मूल्यवान स्मृतियों को न छीनने का प्रयास करना चाहिए।

6.1.2 व्यक्तित्व संबंधी

- प्रद्युम्न जी का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके ऊपर बड़ों का हमेशा आशीर्वाद रहा।
- उनके विवाह के बाद भी पारिवारिक जीवन सुखद रहा।
- वह बचपन से ही बड़े सरल स्वभाव के थे और प्रकृति से लगाव बना रहा।
- प्रद्युम्न जी के घर में धार्मिक वातावरण होने के कारण वे शुरुआत से ही धर्म एवं संस्कृति के प्रति जागरूक रहे। आगे चलकर अपनी लेखनी के माध्यम से विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासतों को नई पहचान दिलाने का अभिनव कार्य किया।
- प्रद्युम्न जी अध्यापन के साथ-साथ सामाजिक कार्य में भी संलग्न रहते हैं। इन्होंने अध्यापकों से संबंधित आंदोलनों में सक्रिय नेतृत्व की भूमिका निभाई। ये हमेशा समय के पाबंद रहते हैं। ठीक समय पर विद्यालय में उपस्थित होकर अपने कार्य को पूरा करते थे। हमेशा कक्षा में जाने से पहले स्वयं उस विषय को पढ़कर जाते थे।
- प्रद्युम्न जी को निर्भीक कलम का साहित्य रत्न पुरस्कार, भाषा रत्न पुरस्कार तथा राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन पुरस्कार मिला।
- प्रद्युम्न जी अपने गृह कार्य का निर्वाह करते हुए बी एड, संस्कृत एवं हिन्दी से एम ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। वह एक योग्य शिक्षक के रूप में जन सामान्य को मार्गदर्शित करते रहते हैं।

6. 2 सुझाव

- हमें समाज में अन्याय, षडयन्त्र, और समाज समाज में हो रहे दुर्व्यवहारों से सतर्क रहना चाहिए। अपितु अन्याय, नफरत और षडयन्त्र के खिलाफ आवाज उठाना चाहिए और सामाजिक सद्गति के लिए मिलकर काम करना होगा।
- हमें नफरत की आग से नहीं, प्रेम और समझ के माध्यम से समाज को सुधारना चाहिए।
- हमें अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।
- समय के साथ हमें बदलना होगा, और सामाजिक सुधार और सद्गुणों को पुनः स्थापित करने की जरूरत है।
- आप अपनी स्वामिभक्ति और विश्वास के साथ अन्याय और षडयन्त्र के खिलाफ संघर्ष करें। चमकीले
- पोस्टरों की बजाय, अपनी नजरों से सीखें और दुनिया के विभिन्न मजहबों और विचारों को समझने का प्रयास करें। नफरत और प्रेम के बीच की खाई को मिटाने का प्रयास करें और एक मित्रभावपूर्ण और समझदार समाज की दिशा में कदम बढ़ाएं। इससे हम सभी को एक सद्भावपूर्ण और एकजुट समाज की दिशा में बढ़ने में मदद मिलेगी।

- हमें अपने भावनाओं और मूल्यों के साथ रहकर अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिए, और हमें शब्दों के माध्यम से अपनी भावनाओं को साझा करने का मौका देना चाहिए।
- हमें शब्दों की सामर्थता को समझना चाहिए।
- हमें सभी में संगठित और सजग रहने की जरूरत है।
- हारे हुए व्यक्ति को हार मानकर एक जगह नहीं बैठना चाहिए बल्कि संघर्ष और प्रयास करते रहना चाहिए।
- हार के बाद भी उसे अपनी कमियों पर काम करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।
- हमें पूर्व के समय को याद कर बाद में पछताना नहीं चाहिए
- हमें गुरु का सम्मान करना चाहिए तथा अच्छे शिष्य बनकर उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।
- गीतकार को गीत गाकर अपनी गायन क्षमता को विकसित करना चाहिए।
- हमें हर समय मेहनत करते रहना चाहिए।
- हमें सदा सत्य अहिंसा और धर्म का पालन करना चाहिए।
- हमें अपने अनुभवों से सीखना चाहिए और आगे बढ़ने के लिए प्रयास करना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

- हमें समाज को समझने, नफरत को दूर करने और प्रेम के माध्यम से एकजुट होने की आवश्यकता है।
- समाज में सद्गुण और न्याय को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि यक सभ्य समाज कि स्थापना हो सके।
- हमें वैमनस्य और प्रेम के बीच सामंजस्य बनाने बनाने की आवश्यकता होती है, जिससे एक दूसरे के प्रति अच्छे संबंधों का निर्वाह हो सके।
- समाज में न्याय और भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष की आवश्यकता है।
- मजहबी और सामाजिक विभिन्नता के मुद्दों पर भी विचार करने की आवश्यकता को उजागर करती है।
- समाज को सद्गुण सीखने और अपने घरों में इसे परिभाषित करने की आवश्यकता है, ताकि यह समृद्धि कर सके
- इसका मकसद बताना है कि हमें विभिन्न मजहबों और समृद्धियों के बावजूद एक-दूसरे के साथ शांति और सहमति में रहना चाहिए।

- इसके माध्यम से लोगों को नफरत और प्रेम के बीच की खाई को समझने की आवश्यकता को भी समझाया जा रहा है।
- इसका पालन करने से हमारे समाज को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी और हम समाज में एकता और सद्भाव को बढ़ावा देंगे।
- कविता शब्दों की शक्ति और मानव जीवन के महत्वपूर्ण मानवीय मुद्दों को उजागर करती है, जैसे कि धर्म, कर्म, और समाजिक न्याय।
- यह कविता हमें यह सिखाती है कि शब्दों का उपयोग हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है और समाज में सुधार कर सकता है।
- यह कविता विभिन्न व्यक्तियों के चरित्र को और उनकी विचारधारा को दर्शाती है। इसमें एक व्यक्ति के व्यक्तित्व में विरासत, शक्ति या पदाधिकार के बिना भी वो समाज को बदल सकता है। सत्य और अहिंसा का महामन्त्र लेकर, हर कोई विश्व समृद्धि की दिशा में साझा योगदान दे सकता है।
- शब्दों के सामाजिक और राजनीतिक महत्व को भी उजागर करती है, जिन्हें एक संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।
- यह कविता वाणी और शब्दों के प्रभाव के बारे में है, जो व्यक्ति के विचारों, अनुभवों, और धारणाओं को प्रकट करने में सहायक होते हैं।
- यह शब्दों की महत्ता और उनकी शक्ति पर ध्यान केंद्रित करती है, जो समाज में परिवर्तन और प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं।
- इस कविता में, शब्दों की ताकत और अद्वितीयता को महत्वपूर्ण रूप से प्रकट किया गया है।
- कविता में यह भी दिखाया गया है कि शब्दों के माध्यम से आप मोह, माया, धर्म, और कर्म के जंजालों से मुक्त हो सकते हैं और नई सोच और प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।
- इसके रूप में, कविता शिक्षाप्रद होती है और हमें शब्दों के महत्व को समझने की प्रोत्साहित करती है।
- यह कविता भाषा की शक्ति को महत्वपूर्ण बनाती है और हमें यह सिखाती है कि शब्दों का उपयोग करके हम अपनी भावनाओं को साझा करने और समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं।
- यह कविता सफाई, स्वच्छता, और सच्चाई के महत्व को उजागर करता है।
- सके माध्यम से हमें यह सिखाया जा रहा है कि समाज में हर किसी की अपनी अहिया होती है, और सच्चे साध्यों को पाने के लिए आपके पास कोई खास सामग्री या प्राप्ति की चाबी की आवश्यकता नहीं होती।

- स्वच्छता, सत्य, और विश्वास की शक्ति हमें समस्याओं का समाधान ढूंढने में मदद कर सकती है। इसके बावजूद, कविता में यह भी दिखाया जा रहा है कि कुछ लोग अपने लाभ के लिए दुरुपयोग करते हैं, जो हमें समाज में दोहरी मानकी आवश्यकता के बारे में सोचने पर मजबूर करता है।
- इस कविता के माध्यम से एक समाज में होने वाले विभिन्न प्रकार के लोगों की चित्रण किया गया है।
- इसके माध्यम से हमें यह सिखाया जा रहा है कि समाज में हर किसी की अपनी अहिया होती हैं, और सच्चे साध्यों को पाने के लिए आपके पास कोई खास सामग्री या प्राप्ति की चाबी की आवश्यकता नहीं होती।
- स्वच्छता, सत्य, और विश्वास की शक्ति हमें समस्याओं का समाधान ढूंढने में मदद कर सकती है।
- इसके बावजूद, कविता में यह भी दिखाया जा रहा है कि कुछ लोग अपने लाभ के लिए दुरुपयोग करते हैं, जो हमें समाज में दोहरी मानकी आवश्यकता के बारे में सोचने पर मजबूर करता है।
- इससे हमें यह सिखने को मिलता है कि सच्चाई, ईमानदारी और सजीवता की ओर बढ़ने का मार्ग सही होता है।
- एक हारा हुआ व्यक्ति जीत के स्वप्न देख सकता है। उन्हें पूरे करने का प्लान बना सकता है।
- लोगों को भरोसा दिलाने का पूर्ण प्रयास कर सकता है। अपनी इच्छाएँ आकांक्षाएँ गुप्त रख सकता है।
- यह कविता व्यक्ति को उसकी आत्म समर्पण और इच्छा की महत्वपूर्णता के प्रति जागरूक करती है, और यह दिखाती है कि वह अपनी कमजोरियों को पर्दे के पीछे छिपा सकता है।
- हार के बावजूद, उम्मीद और संघर्ष से उसका जीवन आगे बढ़ सकता है

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रद्युम्न सिंह जी के शैक्षिक मूल्य परक कविताओं का अन्य कवियों की कविताओं पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रद्युम्न जी की शैक्षिक मूल्य परक कविताओं के आधार पर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व वैचारिक मतभेदों का वर्णन किया जा सकता है।
- प्रद्युम्न जी की शैक्षिक मूल्य परक कविताओं की भांति अन्य कवियों की कविताओं के मध्य तुलनात्मक शोध हेतु अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रद्युम्न जी ने अपनी कविताओं में सत्य अहिंसा की बात की है अतः इनकी कविताओं में निहित सत्य अहिंसा के बारे में शोध से सम्बन्धित गहन चिंतन किया जा सकता है।

- हिन्दी के प्रसिद्ध आधुनिक कवि प्रद्युम्न जी की भांति अन्य समकालीन कवि उमाशंकर व रामकरण साहू जी की कविताओं में शैक्षिक मूल्य परक तथ्यों का विश्लेषण किया जा सकता है।
- प्रद्युम्न जी मुक्त छंद के प्रसिद्ध कवि हैं इन्हीं की भांति अन्य मुक्त छंद वाले कवि की कविताओं का स्वच्छंदता पूर्वक वर्णन किया जा सकता है।
- प्रद्युम्न जी से प्रेरित होकर शिक्षा से सम्बन्धित किसी भी विषय पर भावी शोध किया जा सकता है।
- प्रद्युम्न जी प्रकृति के अति पक्षधर हैं अतः इनसे प्रेरित होकर प्राकृतिक वस्तुओं के बारे में भावी शोध किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसिद्ध कवि प्रद्युम्न सिंह जी द्वारा रचित शैक्षिक मूल्य परक रचनाओं पर आधारित है, भावी शोध में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अधीनता में सुख कहाँ (2023, जुलाई 25)। Dadi Maa Ki Kahaniyan. http://dadimaakikahaniyan.blogspot.com/2012/02/blog-post_22.html?m=1

खरे, उमाकांत (2005)। *बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि: पं० घासीराम व्यास का योगदान*। पी-एच०डी० शोध। (हिन्दी)। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/13018

मृत्यु अटल है (2023, जुलाई 28)। SARKAARIEXAM.IN। https://sarkaariexam.in/20-best-motivational-stories-in-hindi-html/

लक्ष्य प्रेरक प्रसंग (2023, अगस्त 2)। SARKAARIEXAM.IN। https://sarkaariexam.in/20-best-motivational-stories-in-hindi-html/

जान लगा दो या जाने दो–शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग (2023, अगस्त2)। SARKAARIEXAM.IN। https://sarkaariexam.in/best-motivational-stories/

13 प्रेरक प्रसंग और प्रेरणादायक कहानियाँ (2023, अगस्त14)। 1हिन्दी.com। https://www.1hindi.com/*5-

भविष्य में क्या होगा, ये सोचकर वर्तमान को खराब नहीं करना चाहिए (2023, अगस्त16)। http://surl.li/msgpm

राहु-केतु का डर दिखाए वो ढोंगी, जात-पात से ऊपर जिसने जग को साध लिया, वही साधु (2023, अक्टूबर13)। http://surl.li/mqpgx

सत्यनारायण सिंह (1998)। *हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन*। पी-एच०डी० शोध (हिन्दी)। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/15385

गोवित, दिलीप (2023)। *सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में मानवतावाद एवं प्रकृति-चित्रण*। पी-एच० डी० शोध (हिन्दी)। गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद। http://hdl.handle.net/10603/171322

राय, रागिनी (2002)। *केदारनाथ अग्रवाल: व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया।* पी-एच० डी० (हिन्दी)। वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर। http://hdl.handle.net/10603/171322

चौधरी अंकिता (2019)। *हिन्दी नवजागरण और कवि मैथिलीशरण गुप्त।* पी-एच० डी० (हिन्दी)। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। http://hdl.handle.net/10603/349320

परिशिष्ट–अ

कवि प्रद्युम्न जी के समकालीन कवि एवं उनकी रचनाएँ

प्रद्युम्न कुमार सिंह—कुछ भी नहीं होता अनन्त, जबरापुर, बिखरते रिश्ते, युग सहचर, दुनिया इन दिनों, मूर्ति पूजा और औचित्य, खुशबू की तलाश में गुलमोहर,

कौशल किशोर जी—दोआब की नदियां,

कनेरी की आँख, लौटना, कमीज कृष्णदत्त सिंह की रचनाएं- मैंने पढ़ा है, सन्दर्भ होती हैं, बड़ी उर्वर होती हैं हमारी त्रासदियाँ

नीरजा हेमेन्द्र—उसे बढ़ते जाना है, गुलमोहर,

प्रकाश मणि प्रबोध—पुराने पन्ने, वक्त में ही स्वर उभरते हैं, बदबूदार

अरविन्द भारती—बारिश, प्रेम, उसने गीत, हवेली की कहा, शोक

शिव कुशवाहा—कविता की मुक्ति, टूटते हुए परिवेश में, उदास जीवन की परछाइयाँ, जंगल खत्म हो रहें हैं

सरिता सैल—मैं बीज हूँ, मृत्यु, दिहाड़ी मजदूर, प्रेम

आर डी आनन्द—गिद्धों को छीक नहीं आता, स्त्रियाँ कहाँ हैं, प्रवृत्ति प्रभु दयाल खट्टर इससे पहले, भाषा ज्ञान, पहली धूप

अभय सिन्हा—नदी और आग, न दी से समुन्दर तक, जंगल भीतर जंगल

योगेन्द्र कुमार मिश्र—गाँव, नहीं हो सकते तुम मनुष्य

पीयुष कुमार—बर्बरता और लाचारी, कुएं का मेढक

स्वप्निल श्रीवास्तव—वे बैलों की जोड़ी की तरह थे

कबीर दास—बीजक (साखी, संबंध, रमैनी)

तुलसीदास—दोहावली, कवितावली, बरवै, रामलला नहछू

बिहारी लाल—सतसई

सूरदास—सूरसारावली, सूरसागर

परिशिष्ट–ब

कवि प्रद्युम्न से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

रचना उत्सव के जुलाइ 2021 अंक मे मेरी रचना को स्थान मिला है। रचना उत्सव की सम्पादिका अमृता त्रिपाठी जी एवं उनकी सम्पादकीय टीम का हार्दिक धन्यवाद

जब भी देखता हूँ

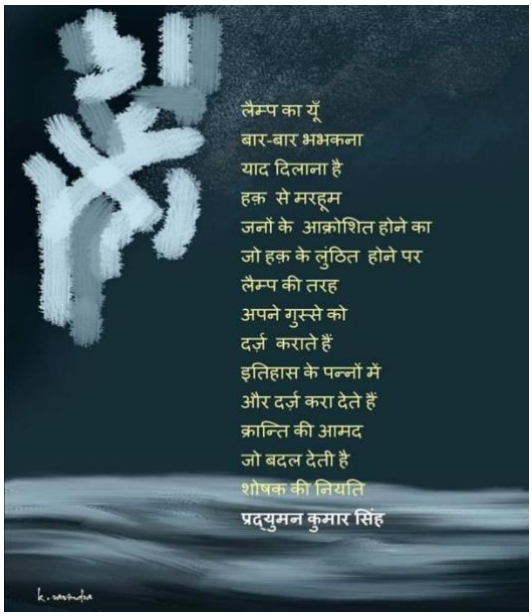

जब भी देखता हूँ
किसी देह का जर्जरपन
अधीर हो उठता है
बुद्ध सरीखा मेरा भी मन
जाग उठती हैं
सोई हुई बहुत सी जिज्ञासाएं
बेताब हो उठते हैं
उत्तर की चाह में कई
अनुत्तरित प्रश्न
जिनके जवाब ढूंढने
निकल पड़ा था
कोई सिद्धार्थ राजसी
ठाठ बाट छोड़कर
और खोज निकाला था
दुःखों से बचाव का
आसान सा मार्ग
जिसे आज भी अपनाता है
सम्पूर्ण विश्व
उसी तरह मेरा मन भी
खोज लेना चाहता है
एक और भी आसान सा
सहज मार्ग
जो दे सके उम्र को भी मात
दूर कर सके
लिबलिबी जिन्दादिली से
बजबजाती जिन्दगी को
जिससे वह जी सके

परिशिष्ट—ब जारी

pk singh Sir Jps Inter College
6 photos · June 3, 2023
जनसंवादकीय
पीड़ाओं का दस्तावेज हैं
उमेश पंकज की रचनाएँ

कहानीकार परिचय
हेडमिस्त्री
जनेऊ

न मुकरने वाला गवाह

नवकिरण साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं संवेदना पत्रिका के नवम्बर दिसम्बर 2022 अंक में मेरी कुछ रचनाओं को स्थान दिया गया है पत्रिका के सम्पादक लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं उनकी सम्पादकीय टीम को सादर धन्यवाद । यह पत्रिका अपने खोजी अभियान एवं अच्छे लेखन को आगे बढ़ाने का कार्य अनवरत जारी रखे हुए। जहाँ कुछ उथले लेखन को कुछ सम्पादक बहुत ही महत्वपूर्ण बताकर पुरस्कारों... See more
नव किरण

जन की पीड़ाओं का मुकम्मल दस्तावेज हैं कवि उमेश

सृजनलोक काव्य पाठ
10 जनवरी 2021, 2pm-5pm
क से कविता

लिखावट के मंच पर जलज, परमार और प्रद्युम्न की कविताएं

किसान-संवाद गोष्ठी में कविता

प्रद्युम्न कुमार सिंह जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

आओ मुझे माँजो
जैसे एक किसान मांजता है
अपने खेतों को
औरतें मांजती हैं, अपने घर को
संत मांजता है अपनी बुद्धि को
बूढ़े मांजते हैं समय को

ISBN 978-93-341-2446-0